सवानेह हज़रत उवैस क़रनी

तर्जुमा

प्रोफेसर खुरशीद हुसैन बुखारी
मुल्क जफर इकबाल एम,ए,एमऐड

तालिफ

शैख़ अहमद बिन महमूद उवैसी

रज़वी किताब घर
423, उर्दू मार्किट, मटिया महल,
जामा मस्जिद दिल्ली-110006

सवानेह

हज़रत उवैस क़रनी

(रज़ियल्लाहु अन्हु)

और

हम

डा॰ सय्यद मुहम्मद आ़मिर गीलानी

ब-एहतेमाम

हाफ़िज़ मुहम्मद क़मरुद्दीन रज़वी

नाशिर

आग़ाईया ख़िदमत कमेटी

पोस्ट बॉक्स नं॰ – 7940, मुम्बई – 400034

बुज़ुर्गानेदीन से अक़ीदतमन्दों के लिए ख़ुशख़बरी

सच्चे आशिक़े रसूल हज़रत ख़्वाजा अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो की सवानेहयात, हसब नसब और फ़ज़ाइल व कमालात के बारे में मज़ीद तफसीलात और मालूमात के लिए अहादीस पाक की इन मुंदर्जाज़ैल मुस्तनद व मुअतबर किताबों का मुताअला करें जो रज़वी किताब घर 423, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-110006 में दस्तयाब हैं।

बुखारी शरीफ	दलायल बैहक़ी
मुस्लिम शरीफ	अबुनौअम
शरह मिश्कात	अबुयाला
मुस्नद अहमद बिन हम्बल	मअदुनुल अदनी
हयातुज़्ज़ाकेरीन	तज़केरतुल अव्लिया
मिर्अतुल असरार	कशफुल महजूब
तुहफतुल अख़्यार	जम्अल जवामेअ
नेसई शरीफ	इब्ने हाकिम

जिस मुक़द्दस हस्ती के बारे में अप पढ़ रहें हैं। किताबों के मुताअले के दौरान जरूर दिल में यह ख़्याल गुज़रा होगा कि आख़िर अल्लाह व रसूल का यह बरगुज़ीदा बन्दा कहां महवे आराम है। अगर आप हज़रत के आस्ताने पर हाज़री देने के मुतमन्नि हों तो आपकी आसानी के लिए आस्ताने तक पहुँचने की तफ़सील दी जा रही है। हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो की अबदी आराम गाह "हुदैदा" से 120 किमी0 दूर "ज़ुबैद" नामी गांव में है। शहर हुदैदा में होटल अमबसेडर आपकी ख़िदमत के लिए मुन्तज़िर और आपका इस्तकबाल करता है। होटल का बैरा शहर हुदैदा तक आपकी रहनुमाई भी करेगा। हुदैदा से ज़ुबैद तक 120 किमी0 की यह दूरी तकरीबन 8 घण्टों में तै होगी। हुदैदा यमन अरब रिपब्लिक में है।

आप की दुआओं का तालिब
अराकीने अगाइया ख़िदमत कमेटी
पो0 ब0 न0 7940, बम्बई-400034

फेहरिस्त

अर्ज़ मोअल्लिफ़

अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के महबूब व मक़बूल बन्दों के हालात, वाक़ेयात और ख़साइस का पढ़ना क़ुर्आन व हदीस के बाद अज़ीम तरीन मुताअ़ला है क्योंकि उन्हीं नफ़ुसे कुदसिया ने अपनी ज़िन्दगियों के ज़रिए अहकामाते क़ुर्आन व हदीस की अमली तसवीर कशी फरमाई। उन औलिया कराम अलैहमुर्रहमान की सीरत व हालाते ज़िन्दगी के बारे में जानने के बाद हमारे दिलों में क़ुदरती तौर पर उन बुज़ुर्ग हस्तियों के लिए मुहब्बत व अक़ीदत के जज़बात उभरतें हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़िअल्लाहो अन्हो से मरवी है कि एक शख़्स ने सरकारे मदीना राहते क़ल्ब व सीना सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की खिदमत सरापाए अज़मत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया "या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम उस शख़्स के लिए क्या हुक्म है कि जिस ने किसी को न देखा हो और न ही मुलाक़ात की हो और न उसकी सोहबत में रहा हो और न ही उसके अमल पर अमल किया हो मगर उस को दोस्त रखता हो सरकारे काएनात सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने फ़रमाया:

'अल-मरओ मअ़ मन अहब्ब'

आदमी उसी के साथ होगा जिस से मुहब्बत करता है।

जब हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाहो अन्हो ने महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम से दीवानवार मुहब्बत की तो वह हमारे लिए मिसाली आशिक और बरगुज़ीदा हस्ती बन गए। उसी तरह अगर औलिया कराम अलैहमुर्रहमान से मुहब्बत करेंगे तो हम भी इन्शाअल्लाह उन के साथ होंगे। जैसा के अब्दुलहक़ मोहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह शरह मिशकात व रसायल व मकातीब में तहरीर फ़रमातें हैं जो शख़्स किसी के नक़्शे क़दम पर चलता है उसे उस बुज़ुर्ग का मरतबा व मक़ाम नसीब हो जाता है।

हम अक्सर हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाहो अन्हो का जिकरे ख़ैर और चन्द मशहूर वाक़्यात सुनते रहते है। कुछ अरसा क़ब्ल मेरे दिल में

यह ख़्वाहिश पैदा हुई कि उस दिवानए रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की हयाते मुबारक के बारे में कुछ जाना जाए। इस बारे में कुछ किताबें पढ़ने की सआ़दत हासिल हुई मगर जिस चीज़ की तलाश थी उससे आ़री पाया इसलिए काफी मेहनत के बाद कुछ मवाद जमा करके इस किताब की तालीफ शुरू की। मेरी यह कोशिश रही के अदब को मलहूज़ ख़ातिर रखते हुए बेजा तवालत से बचते हुए हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाहो अन्हो की सीरते पाक़ को एक जामेअ़ किताब की शक्ल में पेश कर सकुं मगर यह फैसला तो अब आप ही कर सकते है कि मै अपनी इस कोशिश में किस हद तक कामियाब हुआ हुं। मैने यह किताब बिलखुसूस मुंदरजाज़ैल हज़रात के लिए तहरीर की है।

अहले दिल, अहले नज़र, अहले मुहब्बत के लिए
अहले इर्शाद, अहले फ़ैज़, अहले फ़िरासत के लिए
अहले दानिश, अहले दर्द, अहले दरायत के लिए
अहले अदबत, अहले जज़्ब, अहले एनाबत के लिए
अहले नूर, अहले शऊर, अहले शहादत के लिए
अहले फ़क्र, अहले फ़ना, अहले फतवत के लिए
अहले ज़र्फ़, अहले ज़मीर, अहले ज़कावत के लिए
अहले तर्क, अहले तमन्ना, अहले हसरत के लिए
अहले हक़, अहले यकीन, अहले अमानत के लिए
अहले सिद्क़, अहले वला, अहले विलायत के लिए
अहले तमकीन, अहले सुकुर, अहले सकीनत के लिए
अहले माआनी, अहले लफ्ज़, अहले इबादत के लिए
अहले इसरा, अहले कश्फ़, अहले करामत के लिए
अहले शौक़, अहले जौक़, अहले हिम्मत के लिए
अहले क़रार, अहले अमर, अहले इमामत के लिए
अहले ज़िक्र, अहले फ़िक्र, अहले फितनत के लिए
अहले राज़, अहले रमूज़, अहले रियाज़त के लिए
अहले सोज़, अहले साज़, अहले सोहबत के लिए
अहले नाज़, अहले नेयाज़, अहले नज़ाकत के लिए
अहले होश, अहले जोश, अहले जौदत के लिए
अहले हाल, अहले कमाल, अहले कहानत के लिए

अहले जि़द्दत के लिए, अहले रवायत के लिए
अहले ख़्वाब, अहल ख़्याल, अहले ख़ेताबत के लिए
अहले हैरत के लिए, अहले हरारत के लिए

आइए इस किताब को दिल की आखों से पढ़ कर इश्क़ व मस्ती के आलम में गो़ता ज़न हो जाएं ताकि हमारी रूह भी बन्दगी खुदा और इश्के़ रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम से उसी तरह सरशार हो जाए जिस तरह हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो की रूहे मुबारक पर जब यह कैफ़ियत गुज़री तो आप रज़िअल्लाह अन्हो ने झुम-झुम कर अपने तमाम दांते मुबारक एक-एक करके शहीद कर दिए और उन्हीं अदाओं ने उन्हें यह क़ाबिले रश्क़ मुकामे आला दिलवा दिया कि सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम सीने मुबारक से कपड़ा उठा कर यमन की तरफ रूखे अनवर करते हुए फ़रमाते "मै यमन की तरफ़ से नर्सामें रहमत पाता हुं" और हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के आशिक होने के एतेराफ में फ़रमा दिया कि " ताबईन में मेरा अज़ीज़ तरीन दोस्त अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो है"

किताब के आख़िर में हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो की सीरते मुबारक के हालात व खसाइस पेशे नज़र रखते हुए आज के मुसलमानों के लिए सबक़ अख़ज़ करने की कोशिश की है ताकि इस किताब के मोताला के बाद हम कुछ सोचने पर मजबूर हो सकें।

दुआ है कि अल्लाह इस आशिके ज़ार के सद्क़े मेरी इस कोशिश को क़ुबूल फरमाते हुए ज़रिए नजात बनाए और जिन अहबाब ने इस तालीफ़ में मरी रहनुमाई फ़रमाई उन सब के दरजात बुलन्द फ़रमाए।

आमीन बजाहिन नबीयिल अमीन सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम

तालिबे दुआ
सगे अत्तार
मुहम्मद आमिर गिलानी
6-12-91 बरोज़ जुमआतुलमुबारक

मनक़बत

मन्जिले इश्क़ का मिनार अवैस क़रनी रज़िअल्लाहो अन्हो
अशिके सय्यदे अबरार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अवैस क़रनी रज़िअल्लाहो अन्हो

रहमते हक़ के तलबगार अवैस क़रनी रज़िअल्लाहो अन्हो
हम गुनहगारों के गमख़्वार अवैस क़रनी रज़िअल्लाहो अन्हो

जाहिरी आखें को दीदारे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम न हुआ
फ़िर भी करते थे बहुत प्यार अवैस क़रनी रज़िअल्लाहो अन्हो

दिल के आइने में जलवा था हबीबे हक़ सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का
रोज कर लेते थे दीदार अवैस क़रनी रज़िअल्लाहो अन्हो

दुनिया दारों से बहुत दुर रहा करते थे
इश्क़ में रहते थे सरशार अवैस क़रनी रज़िअल्लाहो अन्हो

बख़्शिशे उम्मते मरहुम की करते थे दुआ
तालिबे अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अवैस करनी रज़िअल्लाहो अन्हो

हो सिकन्दर का यह इज़हारे अक़ीदते मन्ज़ूर
आप रज़िअल्लाहो अन्हो की मदह में अशआर अवैस क़रनी रज़िअल्लाहो अन्हो

क़रनी की वजहे तसमीया

कर्न यमन के नवाह में एक छोटा सा गांव है जब उस की तामीर के सिलसिले में खुदाई की गई तो ज़मीन से गाय का एक सींग निकला। अरबी में चुकिं सींग को क़रन कहते है इस लिए गांव का नाम क़रन मशहूर हो गया। यमन के लोग नेहायत रक़ीकुल क़ल्ब और हक़ शनास होते हैं। हज़रत अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) उसी नाम की निस्बत से क़रनी कहलाते हैं। कुछ लोगों का ख़्याल है कि हज़रत अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) के जिस्मे मुबारक पर बाल बहुत ज़्यादा थे। इस लिए उन्हे क़रनी कहा गया।

हसब नसब

आप (रज़िअल्लाह अन्हो) क़रन के मुराद नामी क़बीला के एक शख़्स आमिर के घर पैदा हुए। चन्द रिवायत के मुताबिक़ आप का नाम अब्दुल्लाह मिलता है जबकि बाज़ के मुताबिक़ इब्ने अब्दुल्लाह मिलता है। आप (रज़िअल्लाह अन्हो) का इस्म मुबारक अब्दुल्लाह बिन आमिर (रज़िअल्लाह अन्हो) भी पुकारा जाता है मगर आप (रज़िअल्लाह अन्हो) की वालिदा माजेदा ने आप (रज़िअल्लाह अन्हो) का नाम मुबारक अवैस (रज़िअल्लाह अन्हो) रखा और उसी से आप (रज़िअल्लाह अन्हो) ज्यादा मशहूर हुए। उल्माए अन्साब ने आप (रज़िअल्लाह अन्हो) का सिलसिलए नसब दो तरीक़ों से लिखा है।

1- अवैस (रज़िअल्लाह अन्हो) बिन आमिर बिन जज़्अ़ बिन नालिक बिन उमरो बिन मुसअदा बिन उमरो बिन सअद बिन अस्वान बिन क़रन बिन रोमान बिन नजिया बिन मुरादुल मुरादी अल क़रनी।

2-अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) बिन आमिर बिन जज़्अ बिन मालिक बिन उमरो बिन सअद बिन अस्वान बिन क़रन बिन रोमान बिन नाजिया मुराद बिन मालिक मुज़हिज बिन ज़ैद अलख़......

यह ख़ानदान यारब़ बिन क़हतान तक जाकर ख़त्म हो जाता है। क़हतानी उलनसल अरबों को "अरबुलमआरिया" कहा जाता है।

हज़रत अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) के वालिदे गिरामी आप (रज़िअल्लाह अन्हो) की कम सिनी ही में वेसाल फ़रमा गए और वालिदा ज़ईफ़ा और नाबिना थीं जिन की ख़िदमत में हज़रत अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) ने उमर मुबराक का ज़्यादा तर हिस्सा बसर फ़रमाय।

दीने हज़रत अवैस (रज़िअल्लाह अन्हो)

बाज़ लोगों का ख़्याल है कि क़बीला मुराद ने अपना आबाइ मज़हब तर्क कर दिया था और जलीलुल-क़दर पैग़म्बर हज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के पैरोकार बन गया था। इस लिहाज़ से हज़रत अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) एक मुसलमान क़बीला और ख़ानदान में पैदा हुए।

हज़रत अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) के सरकारे मदीना सरवरे क़लब व सीना (सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम) पर ईमान लाने के बारे में मुख़्तलिफ़ रिवायात मिलती है। इस लिए कुछ कहना मुश्किल है। मगर यह ज़रूर कहा जा सकता है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम) की रेसालत और फ़ैज़ व बरकात की जब तमाम अरब में शोहरत हुई तो दुसरे इलाक़ों की तरह यमन के लोग भी हुज़ूर पुरनूर (सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम) के इस्में मुबारक और ज़ाते गिरामी से आगाह हो गए।

हज़रत अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) को अल्लाह तबारक व तआला ने फितरते सालेह अता की थी। उन्होंने जब ज़िक्रे पाक रहमतुललिल आलमीन (सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम) सुना तो दिल

ने सरकार (सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम) के सच्चे रसूल होने की गवाही दे दी। गोया उन को ग़ायबाना तसदीक़े क़ल्बी हासिल हो गई और फिर यह ईमान वालेहाना इश्क़ की सुरत अख़्तियार कर गय। उसी इश्क़ ने आप (रज़िअल्लाह अन्हो) को फ़िना फ़िर्रसूल कर दिय। आप (रज़िअल्लाह अन्हो) हर वक़्त सरकारे दोआलम (सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम) के अहवाल की जुस्तजू करते रहते और हर वक़्त सुन्नते मुस्तफवी (सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम) पर चलने की कोशिश करते रहते।

ज़ोहद, क़नाअत, इबादत व रियाज़त और इत्तेबाए रसूल (सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम) की उन्होंने ऐसी मिसाल क़ायम की कि आज तक सुलहाए उम्मत के लिए बाइसे रश्क है।

हुल्याए-मुबारक

आप (रज़िअल्लाह अन्हो) का जिस्म मुबारक कमज़ोर और दुबला पतला, क़द लम्बा, रंग सफेदी मायल गन्दुमी, कन्धे फराख़, आखें स्याह, नज़र अक्सर सज़्दा गाह पर रहती, चेहरा मुबारक गोल और पुर हैबत, दाढ़ी घनी, सर के बाल उल्झे हुए अक्सर गर्दो गुबार से अटे हुए और लिबास में आम तौर पर दो कपड़े शामिल होते एक ऊंट के बालों का कम्बल और दोसरा पाजामा।

एक मरतबा आप (रज़िअल्लाह अन्हो) बर्स के मर्ज़ में मुब्तला हुए तो बारगाहे इलाही में दुआ फरमाई "या इलाही मुझ से यह मर्ज़ दूर फरमा अलबत्ता एक निशान मेरे जिस्म पर बाक़ी रहे ताकि मैं तेरी रहमत व शफ़्क़त को हमेशा याद करता रहुं।" बांए हाथ की हथेली पर एक दिरहम के बराबर सुफ़ेद निशान था।

तालीम व तरबीयत

अगरचे हज़रत अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) ने ज़ाहिरी तालीम

हासिल नही की मगर नबी पाक़ (सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम) से मुहब्बत व अक़ीदत के रूहानी तवस्सुल से न सिर्फ आप (रज़िअल्लाह अन्हो) सरकारे मदीना (सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम) से रूहानी तरबीयत याफ्ता थे बल्कि सरकारे कायनात (सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम) की जनाब में आप (रज़िअल्लाह अन्हो) को मरतबैमह बूबियत भी हासिल था। जैसा कि हज़रत अल्लामा अब्दुल क़ादिर अरबली (रहमतुल्लाह अलैहे) अपनी मशहूर तस्नीफ़ ''तफ़रिहुल ख़ातिर'' में तहरीर फरमातें है कि ''हमें यह मालूम होना चाहिए के कामिल इन्सानों की अरवाह का फ़ैज़ कई तरह से होता है आलमे ज़ाहिरी में बिलमुशाफा तरबीयत और तरबीयत कभी मुरब्बी अपनी ज़िन्दगी में करता है और कभी मरने के बाद। अव्वल जैसे सरकारे दोआलम नूरे मुजसिम (सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम) ने अपनी ज़ाहिरी हयोत मुबारक में हज़रत अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) की और हज़रत जाफ़र सादिक़ (रज़िअल्लाह अन्हो) ने हज़रत अबा यज़ीद बुस्तामी (रहमतुल्लाह अलैहे) की तरबियत फरमाई। दोम वह तरबीयत जो नबीये करीम (सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम) ज़ाहिरी परदा फ़रमाने के बाद फरमाते रहे हैं। सोम आलमें ख़्वाब में तरबीयत। चहारुम अरवाह मुजररदह की तरबियत करना जैसे नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम) की रूहे मुबारक ने तमाम अम्बिया (अलैहे मुस्सलाम) की तरबियत फरमाई उसे तरबियते रूह कहा जाता है''।

सादगी

हज़रत अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) ने दुनिया को अपने ऊपर इस कदर तंग फरमा लिया था कि लोग उन्हें दिवाना समझते। आप (रज़िअल्लाह अन्हो) के लिबास, ख़ुराक, गुफ्तार गर्ज़ यह कि हर हर अदा में सादगी झलकती थी। आप (रज़िअल्लाह अन्हो) ने न दुनिया की कोई चीज़ इकठ्ठी की न दुनिया से कुछ उठाया सादगी ही की वजह

से लड़के आप (रज़िअल्लाह अन्हो) को दीवाना समझ कर छेड़ते और ढेले मारते तो आप (रज़िअल्लाह अन्हो) फ़रमाते "बच्चों! छोटी-छोटी कन्करिया मारो ताकि ख़ून न बहे और मै नमाज़ रोज़ा से आजिज़ न हो जाऊं।"

आप (रज़िअल्लाह अन्हो) का ज़ाहिरी हुलियए मुबारक ऐसा सादा था कि बच्चों के अलावा बड़े भी आप (रज़िअल्लाह अन्हो) का मज़ाक उड़ाया करते थे।

खुराक

हज़रत अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) दुनिया से बिल्कुल दिल बरदाश्ता हो गए थे और उन्होंने तर्के दुनिया पर बड़ी-बड़ी सख़्तियां बर्दाश्त की थीं लोग उन्हें दीवाना समझते थे। आप (रज़िअल्लाह अन्हो) की क़ौम के चंन्द लोगों ने एक अलाहिदा मकान बनवाया था। आप (रज़िअल्लाह अन्हो) उसी मकान में रहते थे। अज़ाने फ़ज्र के वक़्त घर से निकल जाते और नमाज़े एशा पर वापस तशरीफ़ लाते वापसी से रास्ता पर छुहारों की गुठ्लियां चुन कर लाते और उन्हें खा लिया करते कभी गुठ्लियां बेच कर छुहारे खरीद लिया करते। कुछ छुहारे अफ़्तार के लिए रख छोड़ते अगर इतने छुहारे या खजूर मिल जाते जो खुराक को केफ़ायत करते तो बेहतर ख़स्ता खजूरें सदक़ा फ़रमा देते रात होते ही तमाम सामाने खुर्द व नोश जो आप (रज़िअल्लाह अन्हो) के पास होता मुसतहेक़ीन में बांट देते।

लिबास

आप (रज़िअल्लाह अन्हो) का लिबास नेहायत सादा था। बेशतर रिवायात के मुताबिक़ आप (रज़िअल्लाह अन्हो) कौड़ियों से चीथड़े उठा लाते और उन्हें धोकर जोड़ लगाकर ख़र्क़ा सी लिया करते बस यही आप का लिबास होता।

हज़रत मुहम्मद पारसा (रहमतुल्लाह अलैहे) अपनी किताब फ़सलुल ख़िताब में हज़रत हसन बसरी (रज़िअल्लाह अन्हो) की रिवायत से तहरीर फ़रमाते है कि आप (रज़िअल्लाह अन्हो) ने हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़िअल्लाह अन्हो) को पेवन्द लगे हुए कम्बल में और हज़रत अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) को ऊंट के पशम के पेवन्द लगे हुए लिबास में देखा है।

हज़रत फ़रीदुद्दीन अत्तार (रहमतुल्लाह अलैहे) अपनी तस्नीफ़ 'तज़केरतुलअम्बिया' में तहरीर फ़रामाते हैं कि हज़रत अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) के पास ऊंट के बालों का एक कम्बल था। लिबास में एक तहबन्द या एज़ार और एक चादर थी। अक्सर कभी यह कपड़े फट जाते तो किसी से सवाल न करते।

शरह तआरूफ में दर्ज है कि आप (रज़िअल्लाह अन्हो) के पास बालों की एक चादर और एक पाजामा था।

हयातुलअलज़ाकेरिन में लिखा है कि आप (रज़िअल्लाह अन्हो) कौड़ियों पर से चिथड़े चुन लाते थे और अपना लिबास बना लेते थे। एक रोज़ कौड़ी पर एक कुत्ता बैठा था। आप (रज़िअल्लाह अन्हो) को देख कर भोकने लगा आप (रज़िअल्लाह अन्हो) ने उस से मुख़ातिब हो कर फ़रमाया "भोंकता क्यों है? जो कुछ तेरे पास है तु खा और जो कुछ मेरे पास है मै खाउंगा। अगर मै बखैरियत पुलसरात से गुज़र गया तो मै तुझ से बेहतर वरना मै तुझसे भी बदतर हूं।"

बसर औक़ात

कशफुलमहजूब में सयेदना अली हिज्वेरी अलमारूफ दाता गंज बख़्श (रहमतुल्लाह अलैहे) फ़रमाते है कि जब हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़िअल्लाह अन्हो) ने अहले क़रन से हज़रत अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) के बारे में दरियाफ़्त फ़रमाया तो लोगों ने बताया कि वह एक दिवाना है आबादी से दूर वीराने में पड़ा रहता है न किसी से मिलता है

जो कुछ लोग खाते है वह खाता है। ग़म और खुशीसे वाक़िफ़ है जब लोग हस्तें हैं तो वह रोता है और जब लोग रोते है तो वह हंसता है।

शुतुरबानी

आप (रज़िअल्लाह अन्हो) का ज़रिये मआश शुतुरबानी था जिस से आप (रज़िअल्लाह अन्हो) अपनी वालिदा की खुराक का इन्तेज़ाम फ़रमाते थे और यमन में आप (रज़िअल्लाह अन्हो) जैसा मुफ़लिस कोई और न था।

शबो रोज़

सैय्यदना हज़रत अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) अक्सर दो काम किया करते थे लोगों के ऊंट चराना यानी शुतुरबानी करना या फिर खजूर की गुठलियां ज़मीन से चुन कर बाज़ार में फ़रोख़्त करना। इन दोनों मशागिल से फ़ारिग़ होकर आप (रज़िअल्लाह अन्हो) अपने रब की तरफ मुतावज्जह होते। अक्सर शबो रोज़ इबादत में गुज़र जाते। दिन में अक्सर रोज़े से रहते शाम को चन्द अदद खुरमें खाकर नमाज़ में मशगूल हो जाते कभी नींद का ग़ल्बा हुआ करता तो अल्लाह-अज़्ज़ व जल्ल से अर्ज़ करते "या इलाही मै सोने वाली आंख और न भरने वाले पेट से पनाह मांगता हूं।"

इबादत

सैय्यदना हज़रत अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) एक शब में फ़रमाते "यह शब रूकू की है" और पूरी रात रूकू में गुज़ार देते। दोसरी शब फ़रमाते "यह शब सजदा की है" और पूरी रात सजदा में गुज़ार देते।लोगों ने अर्ज़ किया कि आप (रज़िअल्लाह अन्हो) इतनी ताक़त रखते है कि दराज़ रातें एक ही हालत मे गुज़ार दें? फ़रमाया "दराज़ रातें कहां है? काश अज़ल से अबद तक एक रात होती जिस

में एक सजदा करके नालहाये बिसयार और गिरीयए बे शुमार करने का मौक़ा नसीब होता। अफ़सोस कि रातें इतनी छोटी है कि सिर्फ़ एक दफा "सुबहान रब्बियलआला" कहने पाता हूं कि दिन हो जाता है।

आप (रज़िअल्लाह अन्हो) पाकि़जगी का बड़ा ख़्याल रखते, तक़वा का यह आलम था कि तीन दिन व तीन रात कुछ न खाया पिया। रास्ता में एक डली पड़ी मिली उसे उठा कर खाना चाहा तो ख़्याल आया कि हराम न हो फौरन फेंक कर चल पड़े।

हेकायत

कीमियाए सआदत और तज़केरतुलऔलिया के मुताबिक़ हज़रत रबीआ बिन हशीम (रज़िअल्लाह अन्हो) ने फ़रमाया मै अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) से मिलने गया, देखा कि फ़जर की नमाज़ में मशग़ूल है नमाज़ के बाद तस्बीह व तहलील में मशग़ूल हो गए। मैं मुन्तज़िर रहा के फारिग़ हो जाएं तो मुलाक़ात करूं मगर वह ता जोहर फारिग़ न हुए। मैंने जोहर की नमाज़ को मिलना चाहा लेकिन वह तस्बीह व तहलील से फरागत ही न पाते उसी तरह तीन शब व रोज़ मैं इन्तेज़ार में रहा। इस दौरान मैं ने आप (रज़िअल्लाह अन्हो) को न खाते पीते और न ही आराम फरमाते देखा। मैंने चौथी रात बग़ौर देखा तो आप (रज़िअल्लाह अन्हो) की आंखों में कुछ ग़ुनुदगी नज़र आयी। इस पर आप (रज़िअल्लाह अन्हो) ने फौरन दुआ कि के ऐ अल्लाह मै पनाह मांगता हूं बहुत सोने वाली आंख और ज़लील व ख़वार पेट से मै ने यह हाल देख कर दिल में सोचा कि आप की इतनी ही ज़ियारत ग़नीमत है। आप (रज़िअल्लाह अन्हो) को मिल कर परिशान न करूं लेहाज़ा मै मुलाक़ात किये बेग़ैर वापस चला आया।

हज़रत अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) का अहादीस मुबारकः में तज़केरह

हज़रत अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) का तज़केरा सरकारे

दोआलम नूरे मुजस्सम (सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम) की अहादीस में भी मिलता है। चन्द अहादीस को हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सोयुती रहमतुल्लाह अलैहे ने अपनी तस्नीफ़ "जम्उलनजवामेह" में हज़रत शैख़ अब्दुलहक़ मोहद्दिस देहलवी (रहमतुल्लाह अलैहे) ने शरहे मिशकात के आख़िरी बाब तज़्किरये:यमन व शाम के तहत और हज़रत मुल्ला अली क़ारी (रहमतुल्लाह अलैहे) ने रेसाला मादनूल-अदनी में तहरीर फ़रमाया है। उन अहादीस का मफ़हूम कुछ इस तरह है।

1. सरकारे दोआलम नूरे मुजस्सम (सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम)ने फ़रमाया कि क़बीला मुराद का एक शख़्स है उस का नाम अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) है वह तुम्हारे पास यमन के वफ़ूद में आएगा। उस के जिस्म पर बर्स के दाग़ थे जो सब मिट चुके है सिर्फ एक दाग़ जो दिरहम के बराबर है बाक़ी है वह अपनी वालिदा माजिद: की बहुत ख़िदमत करता है जब वह अल्लाह की क़सम खाता है तो अल्लाह तबारक व तआला उस को पूरी करता है। अगर उस की दुआए मग़फ़ेरत ले सको तो लेना। - मुस्लिम

2. हज़रत इब्ने सअद रज़िअल्लाह अन्हो से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने फरमाया "ताबेइन में मेरा बेहतरीन दोस्त अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो है" - (हाकिम इब्ने सअद)

3. सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने फ़रमाया कि ताबेईन में मेरा दोस्त ओवैस करनी रज़िअल्लाह अन्हो है। इस की माँ होगी जिस की वह ख़िदमत करता होगा, अगर वह अल्लाह तआला कि क़सम खाकर बात करे तो अल्लाह तआला उस की क़सम पूरी करता है। उस के जिस्म पर एक सफेद दाग़ होगा। ऐ सहाबा! (रिज़्वानुल्लाह अलैहिम अजमईन) तुम अगर उससे मिलो तो उससे दोआ करवाना।

4. नबी पाक सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने फ़रमाया: मेरी उम्मत मे मेरा दोस्त ओवैस करनी (रज़िअल्लाह अन्हो) है। (इब्ने सअद)

5. सरकार मदीना सरवरे क़ल्ब व सीना सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने फ़रमाया: मेरी उम्मत में बअज़ ऐसे भी हैं जो बरहना रहने के सबब मस्जिद में नहीं आ सकते, उन का ईमान लोगों से सवाल करने नहीं देता। उन्हीं में से अवैस (रज़िअल्लाह अन्हो) और हरम बिन हययान (रज़िअल्लाह अन्हो) हैं। (इब्ने नईम)

6. सरकार मदीना राहते कल्ब व सीना सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने फ़रमाया: मेरी उम्मत मे एक अवैस (रज़िअल्लाह अन्हो) नामी शख़्स होगा। रबीअ़ व मोज़र (क़बीले) के आदमियों के बराबर मेरी उम्मत की शफाअत करेगा। (इब्ने अदी)

7. सरकारे दो आलम नूरे मोजस्सम सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने फ़रमाया: मेरी उम्मत में से एक शख़्स की शफाअत से क़बीला मोज़र और क़बीला रबीअ के आदमियों से ज़्यादह लोग बहिश्त में जाऐंगे और उस का नाम अवैस (रज़िअल्लाह अन्हो) होगा। (इब्ने शैबा, मुसतदरिक अज़ इब्ने अब्बास)

8. मदनी ताजदार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने फ़रमाया: मेरी उम्मत में एक शख़्स होगा जिस को लोग अवैस बिन अब्दुल्लाह क़र्नी (रज़िअल्लाह अन्हो) कहते है। तहक़ीक उस की दुआए मग़फ़िरत से मेरी उम्मत क़बीला रबीअ और क़बीला मोज़र की भेड़ बकरियों के बालों के बराबर तादाद में बख़्श दी जायेगी। (इब्ने अब्बास)

9. सरकारे मदीना राहते क़ल्ब व सीना सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम यमन की तरफ़ रूख़ फ़रमाते सीना मुबारक से कपड़ा उठाते और फ़रमाते: "मै यमन की तरफ़ से नसीमे रहमत पाता हूँ।"

(हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैहे और हज़रत मौलाना रूम रहमतुल्लाह अलैहे ने तसरीह फ़रमाई है कि यहां इशारा हज़रत अवैस क़रनी रहमतुल्लाह अलैहे की तरफ़ है)

10. हज़रत उमर फ़ारूक रज़िअल्लाह अन्हो से रिवायत है कि हुज़ूर

अक़दस सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने फ़रमायाः "ताबेइन में सबसे बेहतर एक शख़्स है जिस का नाम अवैस (रज़िअल्लाह अन्हो) है उस की एक ज़ईफ़ वालिदह है। अवैस (रज़िअल्लाह अन्हो) के हाथ पर बरस का निशान है। पस जब उस से मिलो तो उससे कहना कि उम्मत के हक़ में मग़फिरत की दुआ करे।

(मुस्लिम, अबू नईम)

इस हदीस मुबारक में सरकारे दोआलम नूरेमोजस्सम सल्लल्लाह अलैहे व सल्लम ने हज़रत उमर फ़ारूक रज़िअल्लाह अन्हो को पहले ही से फ़रमा दिया के तुम हज़रत अवैस कर्नी (रज़िअल्लाह अन्हो) से मिलोंगे, बल्कि मिलने की तरग़ीब भी दिलादी और उम्मत के हक़ में दुआए मग़फ़िरत करने का हुक्म भी फ़रमाया।

इससे यह भी ज़ाहिर होता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम को हर उम्मती के हालात का इल्म है ख़्वाह वह कहीं भी किसी हाल में हो। इस लिए तो आप सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने सययेदना हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो का न सिर्फ नाम बल्कि उनकी बिमारी की तफ़सीलात और जिस्म पर एक सफेद दाग़ उसके मक़ाम और उस के दिरहम बराबर होने का पता दे दिया। वेलायत और नबूअत के लिए हेजाबात कुछ हैसियत नहीं रखते और सरकारे दोआलम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम अपने आशिक़ हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के बारे में सब कुछ जानते है तो दोसरी तरफ़ दिवानाए रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो भी वेलायत की हदों को पार करने की वजह से अपने महबूब (सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम) के कवाएफ़ से जमाल व वाक़यात से बे ख़बर न थे।

अहकामें शरीअत का दारोमदार ज़ाहिर पर है। इसी लिए तो आशिक़ व माशूक़ में हेजाब न होने के बावजूद हज़रत अवैस क़र्नी

रज़िअल्लाह अन्हो को ताबअी कहा गया सहाबी न कहा गया।

इन अहादीस से यह भी वाज़ेह हुआ कि बुज़ुर्गाने दीन यानी महबूबाने ख़ुदा के पास तलबे दुआ और मुश्किल कुशाई के लिए जाना सहाब-ए-कराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन की सुन्नते मुबारकः है और सरकारे मदीना सरवरे क़तब व सीना सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम का हुक्म भी यही है क्योंकि मदनी आक़ा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने सहाब-ए-कराम रिज़वनुल्लाह अलैहिम अजमईन को हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो से मुलाक़ात की सुरत में उम्मत की बख़्शिश के लिए दुआ करवाने का हुक्म फ़रमया।

यह भी वाज़ेह होता है कि सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम अपने उश्शाक से बे पनाह मुहब्बत फ़रमाते थे बल्कि उश्शाक की मुहब्बत सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की मुहब्बत के मुक़ाबले में न होने के बराबर है और महबूबाने ख़ुदा और उश्शाक़े रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की तलाश और ज़ियारत के लिए सफ़र करना मालूमात हासिल करना या कम अज़कम ख़्वाहिश रखना सहाब-ए-कराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन की सुन्नते मुबारकः है।

बकरियों के बालों की तख़सीस भी इसी लिए की कि उस ज़माना में मज़कूरा क़बायल बकरियों की तादाद की वजह से बहुत मशहूर थे और किसी भी क़बीला में उनसे ज़्यादा बकरियां न थी। अगर हम बकरियों के बालों के बारे में ग़ौर करें तो मालूम होता है कि उन क़बायल की बकरियां अपने बालों की कसरत की वजह से भी मशहूर थीं। आम बकरियों के बाल लाखों में होते है तो जो अपने बालों की वजह से ज़रबुलमसल हों उन बकरियों के बालों की कितनी तादाद होगी और फिर यह एक बकरी की बात नहीं बल्कि दो मशहूर तरीन क़बायल की तमाम तर बकरियों की बात है। बस वाज़ेह हुआ कि एक आशिक़े

रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की शफ़ाअत पर इतने उम्मती बख़्शें जायेंगे तो सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम जिन के अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो आशिक़ है। और जो महबूबे ख़ुदा है उस की शफ़ाअत का क्या आलम होगा।

किसी को नाज़ होगा इबादत की इताअत का
हमें तो नाज़ है मुहम्मद की शफ़ाअत का

तफ़रीहुल खातिर में एक रवायत दर्ज है कि मक़ामे क़ाब क़ौसेन औअदना और मुमक़अद इनद मलिकिन मुक़तदिर पर हुज़ूर सरकारे कायनात सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने एक शख़्स को देखा कि वह सर ता पांव गलीमे नूर से छुप कर आराम कर रहा है। सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने अल्लाह तआला से अर्ज़ की "या इलाही यह कौन है?" अल्लाह ने फ़रमाया: "यह अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो है। सत्तर साल बाद आराम कर रहा है।"

शाने अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो

हज़रत अबू हुरैरह रज़िअल्लाह अन्हो से रिवायत है कि सरकारे दोआलम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने फ़रमाया कि "अल्लाह तआला अपने बन्दों में से ऐसे बर्गुज़ीदा बन्दों को दोस्त रखता है जो दुनियादारों की नज़रों से पोशिदा रहते हैं। उन चेहरों का रंग स्याह, पेट लगे हुए, कमरें पतली होती हैं और ऐसे लापरवाह होते हैं कि अगर बादशाह भी मिले और वह उन से मुलाक़ात की इजाज़त तलब करे तो वह इजाज़त न दें और अगर मालदार औरतें निकाह करना चाहें तो निकाह न करें वह अगर गुम हो जायें तो कोई उन की जुस्तजू (तलाश) न करे। अगर मर जायें तो उन के जनाज़े पर लोग शरीक़ न हों और अगर ज़ाहिर हो तो उन को देखकर कोई ख़ुश न हो। और अगर बीमार हों तो कोई मिज़ाज पुरसी न करें।" सहाब-ए-कराम रिज़्वानुल लाह अलैहीम अजमईन ने दरयाफ़्त किया "या रसूलल्लाह

सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम फ़रमाइये वह कौन हैं?'' फ़रमाया: ''वह अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) है।''

सहाबा रिज़वानुल्लाह अजमईन ने अर्ज़ किया: ''कि यह अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) कौन है?'' फरमाया: ''उस का हुलिया यह है।

उस की आंखें नीलगों होंगी।

दानो कानों के दरमियान काफ़ी फासिला होगा।

क़द दरमेयाना होगा।

ठोड़ी सीने की तरफ झुकी हुई होगी।

आंखें सज्दा गाह पर लगी हुई होंगी।

सीधा हाथ बाएं हाथ पर लगा हुआ होगा।

अपने ऊपर रोता होगा।

उसके ऊपर दो पुराने कपड़े होंगे। जिन में मलबूस होगा। एक पाजामा और दुसरी चादर।

दुनिया में कोई भी उसे नहीं जानता मगर आसमान पर ख़ूब शोहरत है।

अगर क़सम खाए तो अल्लाह तआला उस की क़सम को सच कर दे।

अमीरूल मोमेनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो ने एक मर्तबा हज के मौक़ा पर हाज़िरीन से फ़रमाया तुम में से जो शख़्स क़रन का रहने वाला हो खड़ा हो जाए तो एक आदमी खड़ा हुआ। आप रज़िअल्लाह अन्हो ने उससे हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के बारे में दरयाफ़्त फ़रमाया तो वह कहने लगा ''ऐ अमीरूल मोमेनीन (रज़िअल्लाह अन्हो) वह मेरा चचा ज़ाद भाई है ऊंटों का चरवाहा है और उस मरतबे का आदमी नहीं कि अमीरूल मोमेनीन उसे याद करें। वह आबादी में नहीं रहता लोगों से भागता है ख़ुशी और ग़म से बे नेयाज़ है जब लोग हंसते है वह रोता है और जब लोग रोते है वह

हंसता है लोग उसे दिवाना समझते है।'' यह सुन कर हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो रो पड़े और फ़रमाया ''मै उसी शख़्स की तलाश में हूं मैने रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम को फ़रमाते सुना है कि उस शख़्स की दुआ से बरोज़ केयामत अल्लाह तआला मेरी उम्मत के गुनहगारो में से क़बीला रबीअ व मोज़र की बकरियों के बालों के बराबर तादाद को बख़्श देगा।

हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो की इनफेरादियत

अल्लाह तआला के बर्गुज़ीदा बन्दों में से बाज़ मस्तुर (पोशीदा) होते है हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो मस्तूर बन्दों के सुल्तान है। आप रज़िअल्लाह अन्हो के मज़ार पुरअनवार के बारे में कोई वाज़ेह मक़ाम मुतअय्यन न कर सका। आप रज़िअल्लाह अन्हो दुनिया में छुप कर ज़िन्दगी गुज़ारते रहे। अल्लाह तआला केयामत के दिन भी उन्हें लोंगो की नज़रों से पोशीदा रखेगा और आप रज़िअल्लाह अन्हो अपने हमशक्ल सत्तर हज़ार फ़रिश्तों के झुर्मुट में जन्नत की तरफ़ तशरीफ़ ले जाएंगे।

हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने अपना जुब्बह मुबारक हज़रत अवैस क़रनी को पहुँचाने और उन से उम्मत की बख़्शिश की दुआ करवाने की वसीयत फ़रमाई।

उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की कसीर तादाद आप रज़िअल्लाह अन्हो की दुआ के तुफ़ैल बख़्शी जायेगी।

(ग़ौर फ़रमाइए कि ताबई रज़िअल्लाह अन्हो की यह शान है तो सहाबी रज़िअल्लाह अन्हो की क्या शान होगी और फिर सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की क्या शान होगी।)

यह शान है ख़िदमतगारों की सरकार (सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम) का आलम क्या होगा।

दरबारे रिसालत मआब सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम से नफ़्सुर्रहमान के लक़ब से नवाज़े गए और दरजये महबूबियत आप के हिस्से में आए।

हज़रत उमर फ़ारूक़ और हज़रत अली मुर्तज़ा रज़िअल्लाह अन्होमा ने आप रज़िअल्लाह अन्हो से मुलाक़ात को बाइसे सआदत समझा और मुलाक़ात के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की इजाज़त तलब फ़रमाई

एक रेवायत के मुताबिक़ आशिक़े रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम हज़रत बिलाल रज़िअल्लाह अन्हो भी हज़रत उमर फ़ारूक़ और हज़रत अली रज़िअल्लाहो अन्होमा के हमराह हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हु की ज़ेयारत के लिए तशरीफ़ ले गए।

एक रेवायत के मुताबिक़ आप रज़िअल्लाह अन्हो के जितने भी हम शक्ल होंगे अल्लाह उनको बग़ैर हिसाब व किताब के जन्नत में दाख़िल करेगा।

आप रज़िअल्लाह अन्हो को सययेदुत ताबेइन के लक़ब से भी नवाज़ा गया।

हज़रत शेख़ बख़्शी रहमतुल्लाह अलैहे ने आप रज़िअल्लाह अन्हो की शान में किबलए ताबेइन, कुदवए अरबअीन और नफ़्सुर्रहमान के नाम इस्तेमाल फ़रमाये थे।

किताबे मजलिसुल मोमेनीन में आप रज़िअल्लाह अन्हो को "सोहैले यमन" और " आफ़ताबे क़रन" लिखा गया है।

सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम से मुलाक़ात

ओलमा व मशाइख़ का इज्मा है कि हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो अपने वक़्त के ग़ौस और मस्तुरूल हाल थे। आप रज़िअल्लाह अन्हो सरकारे दोआलम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के हम ज़मान होने के बावजूद आप सल्लल्लाहो अलैहे व

सल्लम की ज़ेयारत से महरूम रहे। उसकी चन्द वजूहात पेश की जाती हैं।

1. मां की ख़िदमत

जमहूर ओलमा व मशायख़ की यही राय है कि हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के ख़िदमते नब्वी सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम में हाज़िर न होने की वजह यह थी कि आप रज़िअल्लाह अन्हो की वालदा अपने से दूर न होने देती थीं और आप रज़िअल्लाह अन्हो दिन रात उन की ख़िदमत व ऐताअत में रहते थे उन की नाफ़रमानी से बहुत डरते थे और यह एसतेताअत भी न रखते थे कि वालिदा माजेदा को भी हमराह सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की ख़िदमते अक़दस में ले जाएं और न उनको एक लम्हा के लिए तन्हा छोड़ सकते थे।

2. लफ्ज़े माँ (मादर) का एक और मफ़हूम

हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के बारे में अक्सर रेवायात में आता है कि आप रज़िअल्लाह अन्हो अपनी मां की ख़िदमत में मसरूफ़ रहते थे इस लिए ज़ेयारते रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के लिए सफ़रे मदीना किया भी तो मां से इजाज़त लेकर किया।

हज़रत शैख़ अब्दुल ख़ालिक़ रहमतुल्लाह अलैहे ने एक नेहायत लतीफ बात इस सिलसिला में बयान फ़रमायी है कि यह जो कहा जाता है कि हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ख़िदमते मादर (मां) के सबब हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम से मुलाक़ाते ज़ाहिरी से माज़ूर थे उसके लिए और एक मानी है जिनके मुताबिक़ लफ्जे मादर से मुराद "उम्मुलअन्वार" है उस की वज़ाहत में फ़रमाते है कि हदीसे कुद्सी है कि अल्लाह तआला ने फ़रमया:

कुन्तो-कंज़न मख़्फ़ीयन फ-अहबबतो अन उरफ-फखलक़तुलखलक़ (हदीसे कुद्सी)

तर्जुमा : मै छुपा हुआ ख़जाना था मै ने चाहा कि मै पहचाना जाऊं तो मैने मख़लूक़ को पैदा किया।

अल्लाह तआला ने जब चाहा कि नूरे वहदत ज़हूरे कसरत करे तो सब से पहले अल्लाह ने अपने नूर से नूरे मुहम्मदी सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम को पैदा किया और उसका नाम उममुल अन्वार रखा। (जिसकी वज़ाहत हदीसे मुबारक में भी है और अव्वलो मा खलकल लाहो नूरी यानी सब से पहले अल्लाह तआला ने मेंरा नूर तख़लीक़ फ़रमाया) जिस तरह औलाद की पैदाइश मां बाप से होती है उसी तरह तमाम अनवार का और मख़लूकात और मौजूदात का वजूद उस नूर से मिनस्सए शहूद पर आया यह नूर अज़ल से अबद तक दरयाए वहदत से मानिन्दे होबाब मुत्तसिल है कभी उपर जलवा गर होता है कभी नूरे ज़ात में ग़ैब हो जाता है। सालिक जब नूरे ज़ात की तरफ़ मोतवज्जह हो जाता है और मोतवज्जह रहता है तो उसी नूर की चमक मुशतअिल होकर सालिक को अपनी लपेट में ले लेती है और सालिक के अन्दर की नूरानियत अपने मरजअ यानी नूरे महम्मदी सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की तरफ़ ओरूज़ करती है और जब नूरे मुहम्मदी से मुत्तसिल हो जाती है तो सालिक पर महवीयत व इस्तिग़राक़ तारी हो जाता है और जुदाई की ताक़त बाक़ी नहीं रहती सिवाए उसके कि उसे हिदायत व इरशाद के मन्सब पर फ़ायज़ किया जाए हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो का मोआमला भी ऐसा ही था। आप रज़िअल्लाह अन्हो नूरे मुहम्मदी सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम में मुस्तग़रक़ थे और जमाले मआनवी से दुरी की ताक़त न रखते थे (उसकी मिसाल ग़ज़्वए ओहद के मौक़ा पर दांत मुबारक की शहादत का वाक़्या है जिस की ख़बर किसी ज़ाहिरी नशरीयाती राब्ते यानी रेडियो, वायरलेस या क़ासिद की अदम मौजूदगी में यमन में बैठे हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो को फौरन पहुंची।)

हज़रत ऐनुलकुज़ात रहमतुल्लाह अलैहे ने भी मादर से मुराद उममुल अन्वार ही लिया है अलबत्ता वह उसे नूरे इलाही कहते हैं और हक़ीक़त यह है कि उन दोनों यानी नूरे इलाही और नूरे मुहम्मदी सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम में कोई फर्क़ ही नहीं क्योंकि मदनी ताजदार सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने फ़रमाया:

मन र–आनी फ़क़द र–अल हक़

(जिसने मुझे देखा पस उसने अल्लाह को देखा)

इस लिए हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो का उन दोनो में से किसी भी मनबए नूर में मुस्तग़र्क़ रहना एक ही बात है।

3. ओहदए क़ुतबीयत मानेअ था

हज़रत इमाम याफ़यी रहमतुल्लाह अलैहे ने तहरीर फ़रमाया है कि अल्लाह तआला कुतब व ग़ौस के अहवाल को अपनी ग़ैरत के सबब अवाम और ख़्वास दोनो से पोशीदा रखता है। इस क़ौल को इस हदीसे मुबारक: से इसतिदलाल किया जा सकता है कि सरकारे मदीना सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने फ़रमाया:

अवलियाई तहत–क़बाई ला यअ़रेफो हुम–गैरी

तरजुमा: मेरे दोस्त मेरी क़बा के नीचे हैं उन को मेरे अलावा कोई नहीं पहचान सकता।

हज़रत मुल्ला अली कारी रहमतुल्लाह अलैहे रिसाला मअ़दनुल अदनी में तहरीर फ़रमाते हैं कि ख़्याल यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के ज़मानए मुबारक में हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ही कुतूब व अबदाल थे क्योंकि आप रज़िअल्लाह अन्हो ही मस्तुरूलहाल रहते थे।

हेदायतुल आ़मा में भी यही लिखा है कि अहदे नब्वी सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम में हज़रत ख़्वाजा अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो मरतब: कुतबीयत रखते थे।

4. गलबए इस्तिग़राक़ मानेअ था

हज़रत दाता गंज बख़्श अली हिजवेरी रहमतुल्लाह अलैहे ने अपनी तसनीफ कशफुलमहजूब में और हज़रत शैख़ फरीदुद्दीन अत्तार रहमतुल्लाह अलैहे ने अपनी तसनीफ तज़्केरतुल औलिया में दर्ज फ़रमाया है कि हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने जो रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की ज़ियारत न की इस उसके दो सबब थे।

1. ग़ल्बए हक़

2. वालिद की ख़िदमत गुज़ारी (जो कि ज़ईफा और नाबीना थी)

हज़रत अबूबक्र बिन इसहाक़ मुहम्मद बिन इब्राहीम बिन याकूब बुख़ारी कलाबादी रहमतुल्लाह अलैहे किताबे तगर्रफुलमजरूबि ततसव्वुफ़ लेमज़हबित तसव्वुफ में तहरीर फ़रमाया है कि जब किसी को मरतबए फना हासिल हो जाता है तो वह ख़ूदी को भूल जाता है और लोग उसको दिवाना और बेखबर समझने लगते है। इस लिए कि तन पोशी और हज़्ज़े नफ़्स हासिल करने का माददा उसमें ज़ायल हो जाता है। न मख़लूक़ उसकी मुहब्बत की रवादार रहती है न उसको उनसे राहत मिलती है चूंकि अपनी सारी अक़ल को मुतलक़ यादे हक़ में मोतवज्जह रखता है। इस लिए ख़लक़ की सोहबत और नफ़्स की मोख़ालिफ़त की उसको कतअी परवाह नहीं रहती उम्मते मोहम्मदिया सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम में उस क़िस्म के मजाज़ीब और दिवाने बहुत हुए है।

5. सुरतें ज़ाहिरी का क़सद न था

हज़रत अैनूल क़ोज़ात रहमतुल्लाह अलैहे लतायफे नफ़ीसा में तहरीर फ़रमाते है कि चुंकि हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की हक़ीक़त को देख लिया था इस लिए आप ने सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की सुरते ज़ाहिरी को देखने का क़सद न किया क्योंकि जब सुरते वाक़यी के देखने से मतलब

पूरा हो जाता है तो सुरते ज़ाहिरी आप ही हेजाब होगी (हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो सुरते वाक़्यी को देखकर बस उसी में मुस्तग़रक़ रहे इसी लिए सुरते ज़ाहिरी की तरफ़ ख़ास तवज्जोह ही न गई।

हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो का मुस्तजाबुद दावात होना

हज़रत मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैहे शरह मिशकात में तहरीर फ़रमाते है कि हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के पोशीदा रहने की एक बड़ी वजह यह भी थी कि आप मुसताजाबुद दावात थे। अगर लोगों में यह बात ज़ाहिर हो जाती तो हर नेक व बद मस्तूर वग़ैर मस्तूर आप रज़िअल्लाह अन्हो के पास आता और आप रज़िअल्लाह अन्हो को तंग करता इस तरह आप रज़िअल्लाह अन्हो के मामुलात में ख़लल पैदा होता और ऐसा भी मुम्किन न था कि लोगों को शाने अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो मालूम होने के बाद रोका जा सकता है।

आप रज़िअल्लाह अन्हो के मुसतजाबुद दावात होने के लिए यही दलील काफ़ी है कि हुज़ूर सरकारे कायनात सल्लल्लाहो अलैहे व सल्ल्म ने हज़रत उमर और हज़रत अली रज़िअल्लाह अन्होमा को तलबे दुआ के लिए जाने की वसीयत फ़रमाई। यह भी क़ाबिले ग़ौर बात है कि अगर सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम यह न बताते कि हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो मुल्के यमन के क़रन नामी गांव में मुराद नामी क़बीला से तअल्लुक़ रखते हैं तो उन्हें कोई भी न जानता।

बरोज़े क़ेयामत सत्तर हजार फ़रिश्ते

हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने शुतरबानों के हुल्या में ज़िन्दगी बसर फ़रमाई और नबी आख़ेरूज़्ज़मा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के अलावा किसी ने भी आप रज़िअल्लाह अन्हो को न पहचाना

और आप रज़िअल्लाह अन्हो की शान व रूत्बा से वाकिफ रहे। उसी तरह बरोज़े क़यामत सत्तर हज़ार फ़रिश्ते आप रज़िअल्लाह अन्हो के हम शक्ल पैदा किये जायेंगे ताकि वहां आप रज़िअल्लाह अन्हो को कोई पहचान न सके और उसी फ़रिश्तों के झुरमूट में जन्नत में दाख़िल होंगे।

शबे मेराज और हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो

हज़रत मौलाना जामी रहमतुल्लाह अलैहे से मन्क़ूल है कि जब सरकारे दोआलम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम फ़लकुल अफ़लाक पर पहुंचे तो मुलाहिज़ा फ़रमाया कि किसी की जिस्मानी रूह का क़ालब रब्बानी फ़ैज़ व बरकात की चादर ओढ़े तख़्त मुरस्सअ़ व नूरानी पर बड़े इत्मेनान व फ़रागत के साथ बे नेयाज़ी के अन्दाज़ से पांव फैलाए हुए पड़ा है। आप सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के इस्तिफ़सार पर हज़रत जिब्रिल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया कि यह शान और यह जुर्रअत हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के क़ालब की है। जिस ने आप सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के इश्क़ में दम मारा है और दर्दे फुर्क़त में क़दम उठाया है। -तफ़रीहुल ख़ातिर

हज़रत इमाम याफ़यी रहमतुल्लाह अलैहे से मन्कूल है कि जब शबे मेराज में हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के ख़रराटे की आवाज़ सुनकर मदनी ताजदार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि यह किस की आवाज़ है? तो ग़ैब से जवाब मिला कि यह अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) की आवाज़ है और मै ने चन्द फ़रिश्तों को उसकी आवाज़ पर मुतअ़यन कर दिया है। क्योंकि यह आवाज़ मुझ को बहुत पसन्द है।

फ़रिश्तों का बेहोश होना

हज़रत शैख़ शरफ़ुद्दीन मनेरी रहमतुल्लाह अलैहे अपने मक्तूबात में तहरीर फ़रमाते है कि एक मर्तबा हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के सीनए सोख़्ता से एक ऐसी लतीफ़ हवा चली कि फ़रिश्ते बेहोश हो गए, होश में आने के बाद हज़रत जिब्रील अहलैहिस्सलाम से पुछने लगे कि हम को सात लाख बरस का ज़माना हो गया मगर आज तक इस क़िस्म की ख़ुशबू नही आई थी। जो अब अहदे ख़ातेमुल्मुर्सलीन सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम में आती है। हज़रत जिब्रील ने हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लहो अलैहे व सल्लम से दरयाफ़्त किया तो सरकारे दोआलम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने फ़रमाया:

"यह नसीमे रहमत यमन के मस्ते अलसत शुतरबान हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो) के सीना की है।

सफ़रे मदीना

वालिदा माजिदा की जि़न्दगी में सफ़रे मदीना

हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो की वालिदा माजेदा नाबीना और ज़ईफा थीं। आप रज़िअल्लाह अन्हो हमेशा उनकी ख़िदमत में हाज़िर रहते थे। इसी लिए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर न हो सके। मगर हमेशा इश्क़े मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम को दिल में बसाए, दिदारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की आरज़ू को दिल में परवान चढ़ाते रहे। जब शौक़े ज़ियारते महबूब सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम सताता तो मुर्ग़ बिस्मिल की तरह तड़पा करते आख़िर एक रोज़ हिम्मत करके आप रज़िअल्लाह अन्हो ने वालिदा माजिदा से चार पहर की रूख़सत तलब कर ही ली। वालिदा साहिबा ने इजाज़त देते हुए कहा कि आठ पहर में मेरे पास आ जाना। आप रज़िअल्लाह अन्हो ने उनकी ज़रूरत की तमाम अशया उन के

सिर्हाने रखी और कोई लम्हा ज़ाया किए बेग़ैर उसी हुल्या में सफ़रे मदीना शुरू फ़रमाया:

सफ़र के दौरान आप रज़िअल्लाह अन्हो नंगे पांव बाल बिखरे हुए, कम्बल कांधो पर रखे बेताबी से भागे चले जाते थे। शौक़े ज़ियारते महबूब सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की वजह से जज़बात में एक पुरलुत्फ तबदीली महसूस करते है ज़ारो क़तार रोते चले जाते थे। क़रन (यमन) से मदीना शरीफ़ तक के तवील रास्ता को आप रज़िअल्लाह अन्हो ने पैदल और काफिलों की मदद से सिर्फ चार पहर में मुकम्मल फ़रमाया। जब आप रज़िअल्लाह अन्हो मदीना शरीफ़ पहूंचे तो आप रज़िअल्लाह अन्हो की हालत नाक़ाबिले बर्दाशत थी और लोगों से बेताबी की हालत में अपने महबूब व मतलूब सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के बारे में पुछते थे। सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के महबूब शहर मदीना की मिट्टी को, दरो दिवार को रोते-रोते चुमते-चुमते आख़िर कार हुजरये मुबारक तक पहुंचे। उम्मुल मोमेनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाह अन्हो घर में तशरीफ़ रखती थीं। जबकि हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम बाहर तशरीफ़ ले गए थे। हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने पुछा तो जवाब मिला कि आप सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम बाहर तशरीफ़ ले गए है न जाने कब तक वापस तशरीफ़ लाएंगे। हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने अर्ज़ किया कि जब मेरे महबूब आक़ा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम वापस तशरीफ़ लाएं तो मेरा सलाम पहुंचा दें और बताएं कि क़रन से आप का गुलाम आप की दीद के लिए बेक़रार हाज़िरे ख़िदमत हुआ था मगर आह! शर्फ़े ज़ियारत से महरूम रहा। शायद मेरी क़िस्मत में सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम का दीदार न था।

हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहो अन्हा हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम से सुन रखा था कि ऐसे हुल्या का शख़्स आए तो

उसे रोकना। चुनान्चे उम्मुल मोमेनीन रज़िअल्लाह अन्होमा ने फ़रमाया कि अगर चाहो तो मस्जिदे नब्वी शरीफ़ में इन्तेज़ार करलो। मगर हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने अर्ज़ किया कि मेरे पास वक़्त बेहद क़लील है मेरी वालिदा नाबीना है और ज़ईफा। मै उनसे सिर्फ आठ पहर की इजाज़त लेकर हाज़िर हुआ हूं। चार पहर आने में सफ़र के दौरान लग गए और चार पहर वापसी के सफ़र के लिए दरकार हैं। शायद इन आंखों की क़िस्मत में शरबते दिदारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम से इश्क़ की प्यास बुझाना नहीं है। इस लिए मैं वापस जा रहा हूं। मेरा सलाम अर्ज़ कर दिजिएगा।

हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के कुछ ही देर बाद शफ़ीअे रोज़े शुमार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम तशरीफ़ लाए तो उम्मुल मोमेनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाह अन्हा ने पुर नम आंखों से आशिक़े ज़ार का सलाम और पैग़ाम दरबारे रिसालत मआब सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम में पेश किया। सरकारे मदीना सुरूरे क़ल्ब व सीना सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम फौरन हुज़रए मुबारक से बाहर तशरीफ़ ले गए और सहाब-ए-कराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज्मइन को हुक्म फ़रमाया कि जल्दी से मदीना शरीफ़ के अतराफ़ में फैल जाओ, और दिवानए मदीना अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) को तलाश कर लो। शमए रिसालत सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के परवाने रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन फौरन मदीना शरीफ़ में हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो को तलाश करने की ग़र्ज़ से निकल खड़े हुए हर तरफ़ तलाश किया गया मगर आप रज़िअल्लाह अन्हो काफ़ी दूर तशरीफ़ ले जा चुके थे। क्योंकि उन्हें जल्द अज़ जल्द वालिदा माजिदा की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर होना था। इस तरह आशिक़े ज़ार की जिस्मानी आंखों से दिदार की हसरत पुरी न हो सकी।

एक रिवायत के मुताबिक़ जब सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व

सल्लम हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के वापस चले जाने के बाद हुज्रा मुबारक में तशरीफ़ लाए तो आते ही दरयाफ़्त फ़रमाया कि ऐ आयशा रज़िअल्लाह अन्हा आज यह नूर कैसा है? हज़रत आयशा रज़िअल्लाह अन्हो ने पुर नम आंखों से अर्ज़ किया कि सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ऐसे हुल्यि का एक दिवाना आप की ज़ियारत करने क़रन से हाज़िर हुआ था सलाम कह कर चला गया। सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम पुर नम आंखों से फौरन बाहर तशरीफ़ लाए और जाते हुए फ़रमाया कि यह नूर अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) का है वही दिवाना आया होगा।

सफ़रे मदीना के बारे में एक यह भी रेवायत मिलती है कि जब सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की वापसी पर हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाह अन्हा ने हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो की आमद, ज़ियारते महबूब सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के लिए बेताबी और फौरन वापसी की ख़बर सुनाई तो सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की इस्तग़राक़ की हालत हुई और आप सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने अपने आशिक़े ज़ार की मुहब्बत में आंसू बहाए।

चन्द कुतुब में इस वाक़या की रेवायत कुछ इस तरह दर्ज है कि एक मर्तबा दिदार रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम का इश्तियाक़ हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो पर इस क़दर ग़ालिब आ गया, कि आप रज़िअल्लाह अन्हो ने मदीना शरीफ़ जाने का इरादा किया। अब इधर इन्होंने इरादा किया उधर सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम को किसी ग़ज़वह में शिरक़त करने के लिये मदीना शरीफ़ से बाहर जाना पड़ा लेकिन हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के महबूब हम सब के ग़म ख़्वार आक़ा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाह अन्हा से फ़रमाया कि मेरे जाने के बाद कोई मेहमान आएगा। अगर वह यहां आए तो उसकी ख़ूब मेहमान

नवाज़ी की जाय और हर तरह से ख़्याल रखा जाय क्योंकि वह बड़ा ही पारसा शख़्स है और मेरी वापसी तक उसे रोकने की कोशिश की जाय और अगर वह न रूकना चाहे तो मजबूर न किया जाय मगर उस की शक्ल सुरत याद रख ली जाय। यह हुक्म फ़रमा कर नबी आख़ेरूज़्ज़मा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम गज़्वह में शिरकत के लिए तशरीफ़ ले गए। बाद में हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो मदीना शरीफ़ पहुंचे। मगर जब मालूम हुआ कि हजूर सरवरे कायनात फख़्रे मौजूदात सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम इस वक़्त मदीना शरीफ़ में मौजूद नहीं है। तो आप रज़िअल्लाह अन्हो ने उसी वक़्त वापसी का क़सद किया। उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की गई मगर वह न रूके और न ही किसी क़िस्म की ख़ातिर करवाई और वापस लौट गए। जब मदनी ताजदार उम्मत के ग़म्ख़्वार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम मदीना वापस तशरीफ़ लाए तो हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाह अन्हा से फौरन पुछा:

"क्या कोई मेहमान आया था?"

उम्मुलमोमेनीन रज़िअल्लाह अन्हा ने अर्ज़ की 'ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम एक शख़्स आया था, उसकी शक्ल व सुरत चरवाहों जैसी थी। आप सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के बारे में यह मालूम हाने के बाद कि आप सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम घर पर मौजूद नहीं हैं। एक लम्हा भी यहां न ठहरा और चला गया।"

सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने फ़रमाय: "आयशा (रज़िअल्लाह अन्हा) तुम्हें मालूम है वह कौन था? अर्ज़ की "नहीं हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम मै तो बिल्कुल नहीं जानती।" फ़रमाय: "वह अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) था जो मेरे दीदार के लिए यहां तक आया था और दीदार की हसरत दिल में ही लेकर वापस चला गया और ठहर भी नही सकता था क्योंकि उस की वालिदा जो बुढ़ी

और नाबीना है उसकी निगहदाशत करने वाला उसके सिवा और कोई नहीं है और यह वह शख़्स है जो कि अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम का सच्चा चाहने वाला है। जिसको सिर्फ ज़िक्रे इलाही से ग़र्ज़ है और वह किसी चीज़ से मोतअस्सिर नही है। अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हा मेरा आशिक़ है और अल्लाह तआला उससे मुहब्बत करता है। हज़रत आयशा रज़िअल्लाह अन्हो ने सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की जुबाने मुबारक से यह अल्फ़ाज सुने तो आप रज़िअल्लाह अन्हा को हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के मक़ाम पर रश्क आने लगा और फ़रमाने लगी। 'ऐ हबीबे खुदा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम वह शख़्स वाक़ई किस क़दर अज़ीम होगा, जिसकी इबादत व रियाज़त और ज़ोहद व तक़्वा की तारीफ़ अल्लाह और उसके हबीब सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम करें।"

वालिदा माजिदा की वफ़ात के बाद सफ़रे मदीना

एक रिवायत के मुताबिक़ हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने अपनी वालिदा माजिदा की वफ़ात के बाद एक बार मदीना मुनव्वरा का सफ़र किया। उस वक़्त सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम भी ज़ाहिरी पर्दा फ़रमा चुके थे। सहाब-ए-कराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन से मुलाक़ात हुई तो उन्होंने पुछा कि आप रज़िअल्लाह अन्हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की हयाते ज़ाहिरी के ज़माने में क्यों न तशरीफ़ लाए? फ़रमाया "मेरी वालिदा माजिदा ज़ईफा और अलील थीं वह मुझे हमेशा अपने पास ही रखती थीं और मै उनकी ख़िदमत में मशग़ूल रहा। इसलिए न आ सका।" सहाब-ए-कराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन ने फ़रमाया: " हम ने तो अपने वालिदैन माल व मताअ़ सबकुछ आक़ा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम पर कुर्बान कर दिया, आप रज़िअल्लाह अन्हो जलाल में आ गए और फ़रमाया: अच्छा आप (रिज़वनुल्लाह अलैहिम अज्मईन) लोगों ने रसूल सल्लल्लाहो

अलैहे व सल्लम की सोहबत पाई है। सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम का हुलिया व जमाल व कमाल बयान करो।" सहाब-ए-कराम रिज़्वानूल्लाह अलैहिम अज्मईन ने बआज़ निशानाते बदन और मोअजेज़ात बयान फ़रमाए। आप रज़िअल्लाह अन्हो ने फ़रमायाः "मेरा सवाल हयाते ज़ाहिरी से न था बल्कि मक़सूदे सवाल हुलिया बातनी और जमाल मानवी के बयान से था। सहाब-ए-कराम रिज़्वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन ने फ़रमाया कि हम जो कुछ जानते थे बता दिया अगर आप रज़िअल्लाह अन्हो मज़ीद कुछ और इरशाद फ़रमाना चाहें तो फ़रमाएं। हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो फर्ते मुहब्बत में झूम गए और हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के शमाएल व ख़साएल और जमाल व कमाल का इस अन्दाज़ में बयान फ़रमाया कि सहाब-ए-कराम रिज़्वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन पर बे ख़ूदी और सरमसती तारी हो गई और जज़्ब व रिक़क़त से निढाल होकर ज़मीन पर गिर गए ज़रा संभले तो उठे और फ़र्ते मुहब्बत से हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के हाथ चुमने लगे।

इस वाक़या से ज़ाहिर हुआ कि सहाब-ए-कराम रिज़्वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन की अगर्चे शान बड़ी आला है मगर उन्होंने जब सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की शान का आशिकाना अन्दाज़ में बयान सुना तो मुसर्रत की वजह से उन्होंने हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के हाथ चूम लिए।

दुसरी बात यह भी मालूम हुई कि अक़ीदत व मुहब्बत के तहत हाथ चुमना सहाब-ए-कराम रिज़्वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन की सुन्नते मुबारकः है।

तीसरा यह कि आशिक़ कही भी हो सरकार सल्लल्लाह अलैहे व सल्लम चाहें तो ज़ाहिरी व बातनी जमाल व कमाल का मुशाहदा करवा देने पर ब इज़्ने परवरदिगार क़ादिर है।

अख़लाके़ जहांगीरी में किताब खुलासतुल हक़ाइक़ के हवाले से दर्ज है कि जब हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो मदीना मुनव्वरा में तशरीफ़ लाए तो मस्जिदे नब्वी शरीफ़ के दरवाज़ा पर आकर खड़े हो गए। लोगों ने कहा कि नबी पाक़ सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम का रौज़ए मुबारक है। आप रज़िअल्लाह अन्हो यह सुन कर बेहोश हो गए। जब होश में आए तो फ़रमाया कि मुझे इस शहर से बाहर ले चलो। क्योंकि जिस ज़मीन में सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम आराम फ़रमा रहे है वहां मेरा रहना मोनासिब नही है और ऐसी मोक़द्दस व मोतह्हर ज़मीन पर क़दम रखना सुए अदबी है।

हज़रत मौलाना ख़ालीक़ दाद फक़ीह रहमतुल्लाह अलैहे ने तहरीर फ़रमाया है कि जब सरकारे मदीना सोरूरे क़ल्ब व सीना सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के ज़ाहिरी पर्दा फ़रमाने की ख़बर आप रज़िअल्लाह अन्हो तक पहुंची तो आप रज़िअल्लाह अन्हो मदीना शरीफ़ की तरफ़ रवाना हुए। मगर शहर मदीना के क़रीब पहुंचे ही थे कि यह ख़्याल आया कि ऐसा न हो। मेरे पांव ज़मीन पर हों और ज़ाते मोक़द्दसा मोतह्हरा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम का मुबारक जिस्म ज़ेरे ज़मीन हो और वापस लौट आए।

जुब्बा मुबारक और हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो

सरवरे कायेनात सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने विसाले ज़ाहिरी के वक़्त अपना जुब्बा मुबारक हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो को पहुंचाने और उन से उम्मत की बख़्शिश की दुआ की बाबत फ़रमाया था चुनाचे हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के विसाले ज़ाहिरी के बाद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़िअल्लाह अन्हो के ज़मान-ए-ख़िलाफत में तलाशे बिस्यार के बावजूद हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो का पता न चला। इस लिये रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम का जुब्बा मुबारक और पैग़ाम इस आशिक़ तक न पहुंच सका। हज़रत

उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो की ख़िलाफ़त के आख़िरी अय्याम में उन का पता चला तो फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की तामील में हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो और हज़रत अली कर्रमुल्लाहो वजहहु हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो से मुलाक़ात के लिए तशरीफ़ ले गए। एक रिवायत के मुताबिक़ आशिके़ रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम हज़रत बिलाल हब्शी रज़िअल्लाह अन्हो भी उनके हमराह थे।

दो आशिक़ आमने सामने

यमन पहुंच कर हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो को पुछा गया तो उनके बारे में कुछ मालूम न हो सका कि आप रज़िअल्लाह अन्हो इस वक़्त कहां है। इसी इन्तेज़ार में थे कि एक शख़्स ने आकर बताया कि हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो इस वक़्त नमाज़े मग़्रिब अदा करने के बाद अबदालान की रविश पर जाते हैं। हज़रत बिलाल रज़िअल्लाह अन्हो उधर गए। आप रज़िअल्लाह अन्हो ने सलाम किया तो हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो की ज़ुबान मुबारक से लफ्ज़ ''हू'' निकला। हज़रत बिलाल रज़िअल्लाह अन्हो पर हाल की कैफियत तारी हो गई। और आप रज़िअल्लाह अन्हो बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़े। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो को ख़बर मिली तो उन्हे उठा कर हज़रत अली कर्रमुल्लाह के सामने ले गए जिन्होंने कुछ पढ़कर उन पर दम फ़रमाया हज़रत बिलाल रज़िअल्लाह अन्हो होश में आ गए। पुछा कि आप रज़िअल्लाह अन्हो को क्या हुआ? उन्होंने सारी कैफ़ियत कह सुनाई और फ़रमाया कि मुझे यक़ीन है कि वह हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ही हैं जिन की मुलाक़ात के लिए हम यहां आए है।

सहाब-ए-कराम रिज़्वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन की हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो से मुलाक़ात

हज़रत बिलाल रज़िअल्लाह अन्हो ने जब अपनी मुलाक़ात के बारे में बताया तो हज़रत अली कर्रमल्लाहो वजहहु ने फ़रमाया कि आप रज़िअल्लाह अन्हो अब फिर उधर जांए और जब हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो को देखें तो उन से हमारा सलाम कहें और बताएं कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के सहाबा रिज़्वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन आप रज़िअल्लाह अन्हो से मिलना चाहते है। जब आप रज़िअल्लाह अन्हो पसन्द फ़रमाएं तो मुलाक़ात का मौक़ा दें। हज़रत बिलाल रज़िअल्लाह अन्हो ने पैग़ाम पहुंचाया तो हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने फ़रमाया कि जुम्अतुलमुबारक के दिन सुबह की नमाज़ हमारे साथ अदा फ़रमाएं। अल्बत्ता रईसाने यमन को भी साथ लेते आएं। उस वक़्त तक यमन बल्कि क़स्बा क़रन में भी हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो को कोई नही जानता था। जुम्अतुलमुबारक के दिन जब मोक़र्ररह जगह पर पहुंचे तो सामने एक चबुतरा नज़र आया। क़रीब गए तो देखा वहां एक ख़िलक़त जमा है और नजदीक आने पर मालूम हुआ कि हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो सरे मुबारक पर चित्रशाही सजाए शाहाना लिबास ज़ेबे तन किए तख़्ते शाही पर जल्वा अफरोज़ हैं। रईसाने यमन हैरत व इस्तेजाब के आलम में यह मन्ज़र देखते रह गए। सहाब-ए-कराम रिज़्वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन के पहूंचने पर आप रज़िअल्लाह अन्हो से मुलाक़ात करके नमाज़ में मशगूल हो गए और नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद सहाब-ए-कराम रिज़्वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन से मुख़्तसर गुफ्तगू फ़रमाई और फिर रूख़्सत फ़रमाया।

कहते है कि यह सब तख़्त व ताज, ख़ैमागाह और लशकर दरगाहे रब्बुलआलमीन से फ़रिश्ते लाए थे ताकि हज़रत अवैस क़रनी

रज़िअल्लाह अन्हो की असल शान की एक हल्की सी झलक दिखाई जाए और अब इस ख़ैमागाह को फ़रिश्ते उठाते दुनिया में फिरते हैं। (वल्लाहो आलम)

बरिवायत दिगर जब हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो और हज़रत अली कर्रमल्लाह वजहहु हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम का जुब्बा मुबारक लेकर क़रन के जंगल में पहुंचे तो हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो को नमाज़ पढ़ते पाया। आप रज़िअल्लाह अन्हो को आहट महसूस हुई तो नमाज़ को मुखतसर किया और सलाम फेर कर फ़रमाया कि आज से पहले मुझे किसी ने नमाज़ पढ़ते नहीं देखा आप साहेबान कौन हैं? सहाब-ए-कराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन ने सलाम किया हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने सलाम का जवाब दिया और ख़ामोश खड़े हो रहे। सहाब-ए-कराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन ने पूछा "आप रज़िअल्लाह अन्हो का नाम क्या है" फ़रमाया "अब्दुल्लाह" (कुछ लोगों के नज़दीक आप रज़िअल्लाह अन्हो का नाम अब्दुल्लाह बिन आमिर है जबकि अब्दुल्लाह कहने से मुराद अल्लाह का बन्दा कहना भी हो सकता है) हज़रत अली कर्रमल्लाह वजहहू ने फरमाया जो कुछ ज़मीन व आसमान और उनके माबैन है सब माबूदे बरहक़ की बन्दगी में आप (रज़िअल्लाह अन्हो) को परवर दिगार काबा और उस हरम की क़सम अपना वह नाम बताएं जो आप की मां ने रखा है। हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने फ़रमाया: "आप रज़िअल्लाह अन्हो लोग क्या चाहते हैं?" मेरा नाम अवैस (रज़िअल्लाह अन्हो) है। "सहाब-ए-कराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन ने फ़रमाया: " अपना पहलू खोल कर दिखाइये" जब पहलू खोल कर दिखाया तो उन्होंने बर्स का निशान देखा तो फ़रमाया: "हमने यह सब कुछ तहक़ीक़े हाल के लिए किया था क्योंकि हम जनाबे रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के सहाबी (रिज़वानुल्लह

अलैहिम अज्मईन) है। हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने हमे आप रज़िअल्लाह अन्हो की जो निशानियां बताई थी वह हम ने देख ली है। हमें सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने हुक्म फ़रमाया था कि हम आप रज़िअल्लाह अन्हो को सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम का सलाम पहुंचाएं और आप रज़िअल्लाह अन्हो से उम्मत मोहम्मदिया सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की बख़्शिश की दुआ करवाएं। हज़रत अवैस क़रनरी रज़िअल्लाह अन्हो ने फ़रमायाः दुआ के लायक़ तो आप रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन है। (सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन की बुलन्द शान की तरफ़ ईशरा फ़रमाया) सहाब-ए-कराम रिज़वानुल्लाह अज्मईन ने जवाब में फ़रमाया हम तो दुआ करते ही रहते हैं। आप रज़िअल्लाह अन्हो भी हस्बे हुक्म व वसीयते महबूब सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम दुआ फ़रमाइए। हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने जुब्बए मुबारक लिया और दूर एक तरफ़ को चले गए। जुब्बा मुबारक को आगे रख कर सर ज़मीन पर रख दिया और अर्ज़ करने लगे, "ऐ अल्लाह अज़्ज़ व ज्लल! मै यह मुरवकाअ़ उस वक़्त तक न पहनुंगा जब तक तु मेरे आक़ा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की सारी उम्मत को बख़्शा न दे" अल्लाह तबारक व तआला अपने महबूब सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम से बे पनाह मुहब्बत करता है और बेशक वह चाहता है कि महबूब सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की हर ख़्वाहिश और हर हुक्म पूरा हो। सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की वसीयत थी कि आप सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम का जुब्बा मुबारक हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो पहनें। अब हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो इस हक़ीक़त से वाक़िफ थे कि अल्लाह तआला की रज़ा भी इसी में शामिल है कि जुब्बा मुबारक पहना जाए इस लिए आप रज़िअल्लाह अन्हो ने जुब्बे मुबारक पहनने से पहले अल्लाह तआला

के हुज़ूर में यह शर्त पेश कर दी कि तेरे महबूब सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम का हुक्म तब ही पूरा होगा कि जब तु अपने महबूब सल्ल्ल्लाहो अलैहे व सल्लम की उम्मत को बख़्श देने की ख़ूशख़बरी सुनाएगा। एक और नुक्ता जो वाज़ेह होता है कि सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम का जुब्बा मुबारक के साथ उम्मत की बख़्शिश के लिए दुआ का हुक्म फ़रमाना यह वाजेह करता है कि सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने ही हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो को अपनी वसीयत के ज़रिए ऐसा करने का इशारा फ़रमाया और सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम को अपनी उम्मत से बेपनाह मुहब्बत है इतनी कि आक़ा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम जुब्बा मुबारक जिस आशिक़ रज़िअल्लाह अन्हो को इनायत फ़रमा रहे है। उन्हें भी उम्मत की बख़्शिश की दुआ करने का हुक्म फ़रमा रहे हैं।

जब हज़रत अवैस क़रनी को सज्दे में ज़्यादा देर हो गई तो सहाब-ए-कराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन को ख़्याल हुआ कि शायद वेसाल न फ़रमा गएं हों। वह क़रीब पहूंचे तो आप रज़िअल्लाह अन्हो ने सज्दा से सर मुबारक उठाया और फ़रमायाः अगर आप (रिज़वानुल्लाह अज्मईन) इधर तशरीफ़ न लाते तो मैं उस वक़्त तक सज्दे से सर न उठाता जब तक मुझे सारी उम्मत की बख़्शिश का मुज़दह न सुना दिया जाता बहर हाल अब भी अल्लाह तआला ने इस क़दर (यानी क़बीला रबीअ और मुज़र की भेड़ बकरियों के बालों के बराबर गुनहगारों की बख़्शिश की ख़बर सुनाई तो सहाब-ए-कराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन ने कल्मा पढ़ा और सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के नबी बरहक़ होने की एक और दलील को मोशाहदा करने की वजह से मुसर्रत के साथ फ़रमाया कि (ग़ैब का इल्म जानने वाले सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने हक़ व सच फ़रमाया था कि अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) की शफ़ाअत पर रबीअ और मुज़र

नामी क़बायल की भेड़ बकरियों के बालो के बराबर गुनहगारों की बख़्शिश होगी। ग़ौर फ़रमाइए यहां सिर्फ भेड़ बकरियों के बालों का ज़िक्र है। यह भेड़ बकरियों के बालों की कसीर तादाद की वजह से सारे बेलादुल अरब में मारूफ़ थे। दुसरा यह कि यहां की भेड़ बकरियों के बाल भी बहुत ज़्यादा होते थे। कुछ लोगों का कहना है कि यह इलाके़ निस्बतन ऊंचाई पर वाकेय थें। इस लिए यहां की भेड़ बकरियों के बाल भी बहुत ज़्यादा होतें थे। एक इन्सान के जिस्म पर पांच लाख से जेयादा बाल होते है तो सोचिए एक भेड़ या बकरी के जिस्म पर कितने बाल होंगे और वह भी उन मारूफ़ क़बायल की भेड़ बकरियों के!

तीसरे जो सबसे अहम नुक्ता सामने आता है वह यह है। अहादीस और तमाम रवायतों में मकान (यानी दोना क़बायल) की तो कैद है मगर ज़मान की कै़द नहीं तो यह वाज़ेह हुआ कि उन्हीं क़बायल में अज़ल से अबद तक जितनी भेड़ बकरियां जन्म लेती रहेंगी उन सबके बालों के बराबर उम्मती हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो की शफ़ाअत के सद्के़ में दाख़िले बहिश्त होंगे। ज़ाहिर पर इस तादाद का अन्दाज़ा लगाना भी हमारे लिए नामुम्किन है।

चौथी बात यह कि जब एक ताबअी की सिफ़ारिश पर इतने उम्मती बख़्शे जाएंगे तो सहाबी, फिर खुल्फ़ाए राशदीन, फिर रोसुल, और फिर सययेदुल मुरसलीन सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की शफ़ाअत का क्या आलम होगा। (सुबहानल्लाह)

शफ़ाअत के सद्के़ जन्नत मिली है।
अमल थे जहन्नम में जाने के क़ाबिल।

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो से मुलाक़ात की एक रिवायत

एक रिवायत है कि उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो हमेशा हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो की तलाश व जुस्तजू में रहे। आप रज़िअल्लाह अन्होके अहदे ख़िलाफ़त में एक मर्तबा यमन से मोजाहिदीन का एक क़ाफ़िला मदीना मुनव्वरा पहुंचा कि मरकज़ से हेदायत लेकर अफ़वाजे इसलाम में शामिल हो जाएं जो इराक़ अजम, इरान शाम वग़ैरह में मस्रूफ़े जेहाद थीं, अमीरूल मोमेनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्होको इस क़ाफ़िले की आमद की इत्तेला मिली तो आप रज़िअल्लाह अन्हो उनके पास तशरीफ़ ले गए और हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के बारे में पुछा। लोगों के बताने पर आप (रज़िअल्लाह अन्हो) सीधे उनके पास क़रन तशरीफ़ ले गए और मुलाक़ात के वक़्त सलाम के बाद पुछा कि क्या आप रज़िअल्लाह अन्हो का नाम अवैस (रज़िअल्लाह अन्हो) है? उन्होंने इसबात में जवाब दिया तो दरयाफ़्त फ़रमाया कि क्या तुम्हारी वालिदा है? हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने फ़रमाया: "हां" इसके बाद हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो ने जो कुछ रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम से आप रज़िअल्लाह अन्हो के बारे में सुना था ब्यान फ़रमाया और देखा कि तमाम निशानात उनमें मौजूद थीं। फिर कुछ गुफ़्तगू फ़रमाने के बाद दुआए मग़फ़ेरत के लिए फ़रमाया तो हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो के हक़ में दुआए मग़फ़ेरत फ़रमाई।

(इस रिवायत में हज़रत अली कर्रमल्लाह वजहहू या हज़रत बिलाल रज़िअल्लाह अन्हो में से किसी भी सहाबी का हज़रत उमर रज़िअल्लाह अन्होके हमराह होना साबित नही होता।)

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो की मुलाकात से अगले

साल कूफा का एक मोअज़्ज़ज़ शख़्स हज के लिए आया, हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो ने उससे हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो का हाल पुछा तो उसने अर्ज़ किया कि " ऐ अमीरूल मोमेनीन रज़िअल्लाह अन्हो! वह नेहायत तंगदस्ती में है और एक बोसिदा झोंपड़ी में रहते हैं। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो ने उस शख़्स से हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के फ़ज़ायल के बारे में हदीस मुबारकः सुनाई और उसके ज़रिए सलाम भेजा। वापसी पर वह शख़्स हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और दुआए मग़फ़ेरत की दरख़्वास्त की आप रज़िअल्लाह अन्हो ने फ़रमाया कि तुम अभी ताज़ा ताज़ा एक मुक़द्दस सफ़र से आ रहे हो। इस लिए तुम मेरे लिए दुआ करो फिर पुछा तुम हज़रत उमर रज़िअल्लाह अन्हो से मिले थे? उसने इसबात में जवाब दिया। इस गुफ़्तगू के बाद हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने उस शख़्स के बारे मुं दुआए मग़फ़ेरत फ़रमाई। (मुस्लिम किताबुल फ़ज़ायल)

सहाब-ए-कराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन का सेवाल और हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो का जवाब

सहाब-ए-कराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन ने फ़रमाया, "ऐ अवैस क़रनी (रज़िअल्लाह अन्हो) आप (रज़िअल्लाह अन्हो) सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर क्यों नहीं हुए? हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने यह जवाब न दिया कि मैं मां की ख़िदमत और ग़ल्बए हाल की वजह से हाज़िरे ख़िदमत न हुआ बल्कि उल्टा उन्हीं से पुछा कि आप रज़िअल्लाह अन्हो दोनों हज़रात मारकअे उहद में शरीक़ थे बताइये मेरे आक़ा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम का कौन सा दांत मुबारक शहीद हुआ था? सहाब-ए-कराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन ने इस बात पर कभी ग़ौर ही न फ़रमाया था लेहाज़ा जवाब में फ़रमाया कि हमें ख़्याल नहीं कि कौन सा दांत

मुबारक था इस पर हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने ग़ल्बए मुहब्बत में अपने दांत एक-एक करके तोड़ने का वाक़्या सुनाया कि उस वक़्त में क़रन के जंगल में अपने भाई के ऊंट चरा रहा था। मुझे ख़बर मिली कि मेरे प्यारे महबूब मेरे आक़ा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के दो दांत मुबारक अभी अभी मार्कए उहद में शहीद हो गए है। मैंने अपना एक दांत तोड़ा फिर ख़्याल हुआ वल्लाहो आलम शायद यह दांत न हो फिर दुसरा दांत तोड़ा फिर तीसरा। इसी तरह एक एक करके सारे दांत तोड़ डाले। (यह वह अदा है जो ता क़ेयामत आशिक़े मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की रहनुमाई और पेशवाई के लिए काफी है) जब हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो ने यह वाक़्या सुना तो बेहद मुतअस्सिर हुए और फ़रमाया: ''मेरे लिए दुआ फ़रमाइए।''

हज़ारत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने फ़रमाय, ''मैं अपनी दुआ को अपने लिए या किसी और कि लिए ख़ास नही करता बल्कि हर शख़्स के लिए जो बहरोबर में है नमाज़ के बाद मग़फ़ेरत की दुआ करता हूं। और अल्लाह तआला से तमाम मोमिन मर्दो और औरतों, मुसलमान मर्दो और औरतों की बख़्शिश तलब करता हूं। पस ऐ उमर रज़ीयल्लाहो अन्हो अगर अपना इमान सलामत ले गए तो मेरी दुआ क़ब्र में तुम्हे ज़रूर मिल जाएगी।''

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो की गुफ़्तगू से और भी ज़्यादा मुतअस्सिर हुए और फ़रमाया: ''मै ख़िलाफ़त को दो रोटी के बदले देता हूं।'' आप रज़िअल्लाह अन्हो ने जवाब मे फ़रमाया: '' ऐसा कौन है जो उसे लेगा? उसे सरे बाज़ार फैंक दो और कह दो जिसका जी चाहे उठाले।'' (यानी आप रज़िअल्लाह अन्हो ने इस तरफ़ इशारा फ़रमाया कि तालिबाने हक़ हुक्मरानी की ज़िम्मेदारियों को समझतें है इसी लिए इक़्तेदार के हरीस नही होते)

इस मुलाक़ात के बारे में जानने के बाद यह अन्दाज़ा होता है कि मुहब्बत का मेयार मुख़्तलिफ़ और इनफरादी होता है हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो और हज़रत अली कर्रमल्लाह वजहहु अगर्चे सरकारे दोआलम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की मुहब्बत की बेमिसाल मुजस्समे थे लेकिन फिर भी उन्होंने मदनी ताजदार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के दांत मुबारक शहीद होने पर अपने दांत नहीं तोड़े।

दरअसल सहब-ए-कराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन ने एहतरामन कभी रूख़े अनवर को बग़ौर देखने के लिए नज़रें ही न उठाई थी। बल्कि हमेशा दरबारे रिसालत सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम में नज़रें झुकाए हाज़िर होते थे इस लिए मुहब्बत उस पर कोई एतराज नहीं कर सकती और दुसरी तरफ़ अगर हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने दांतों की शहादत का सुनते ही अपने तममा दांत तोड़ डाले इस पर मुहब्बत नाज़ ज़रूर कर सकती है।

मुन्दजा बाला वाक्या में एक बात वज़ाहत तलब है हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो को हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो का यह कहना कि अगर क़ब्र में ईमान सलामत ले जाओगे तो मेरी दुआ को वहां पाओगे। शैतान किसी के ज़ेहन में यह ख़्याल भी ला सकता है कि हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो (मआज़ल्लाह) हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो की आक़ेबते गै़र महमूदा की ख़बर दे रहे थे जो यह तसव्वूर करे वह ऐसे हैं कि वह अपनी आक़ेबत बर्बाद करले वरना मुहावराते कुर्आन व हदीस से बा ख़बर इन्सान ऐसे तसव्वुर को जेहालत से ताबीर करता है। जैसाकि अल्लाह तआला ने अपने महबूब रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम से फ़रमाया:

अगर आप उनकी ख़्वाहिशात की इततेबाअ़ करें, उसके बाद कि आप के पास इल्म आया है आप उस वक़्त ज़ालिम होंगे।

और सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने हज़रत आयशा

सिद्दीक़ा से फ़रमायाः " अगर तुझ से ग़लती हो गई है तो इस्तिग़फ़ार करो।"

इन दोनो मिसालों से क्या कोई कह सकता है कि मआज़ल्लाह सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम अहले किताव की इत्तेबाअ़ फ़रमाते थे या उम्मुल मोमेनीन रज़िअल्लाह अन्हा से कोई ग़लती हुई। तो यह वाज़ेह होआ कि यह मुहावरे उमुमी होते और बात की वज़ाहत के लिए इस्तेमाल किये जाते हैं।

मुलाक़ात के दौरान अमीरूल मोमेनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो ने वसीयत की ख़्वाहिश ज़ाहिर फ़रमाई तो हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने फ़रमायाः "ऐ उमर रज़िअल्लाह अन्हो क्या आप रज़िअल्लाह अन्हो अल्लाह तआला को पहचानते है" फ़रमायाः "हां पहचानता हूं।" हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने फ़रमायाः " इसके बाद अगर किसी को न पहचाने तो आप रज़िअल्लाह अन्हो के लिए बेहतर है।" फिर हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने पुछा, " क्या अल्लाह तआला आप रज़िअल्लाह अन्हो को जानता है।" फ़रमाया, "हां" तो हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने फ़रमाया, "अगर इसके सिवा कोई और आप रज़िअल्लाह अन्हो को न जाने तो बेहतर है।"

हज़रत उमर फ़ारूक़ ने फ़रमायाः " मै आप (रज़िअल्लाह अन्हो) की ख़िदमत में कुछ रक़म पेश करना चाहता हूं।" आप रज़िअल्लाह अन्हो ने जेब में हाथ डाला दो दिर्हम निकले फ़रमाने लगे "मै ने शुतरबानी से दो दिर्हम कमाए हैं। अगर आप रज़िअल्लाह अन्हो इसकी ज़मानत दें कि मै उनके खर्च होने तक ज़िन्दा रहुंगा तो देदें" यह सुन कर हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो दहाड़े मार कर रोने लगे।

तब हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने फ़रमायाः "ऐ उमर (रज़िअल्लाह अन्हो) अब आप (रज़िअल्लाह अन्हो) तशरीफ़ ले जांए।

क़ेयामत क़रीब है मै ज़ादे राह की फ़िक्र में हूं।''

जब अहले क़रन कूफ़ा से वापस अपने वतन आए तो हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो की इतनी इज़्ज़त और ताज़ीम की कि अपने सरदार की भी न की। हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो यह हाल देखकर वहां से चले गए और कूफ़ा में आकर रहने लगे जहां आप रज़िअल्लाह अन्हो को हज़रत हरम बिन हय्यान के अलावा किसी ने नहीं देखा।

हेकायत:- हज़रत असीर बिन जाबिर रहमतुल्लाह अलैहे का फ़रमान है कि कूफ़ा में एक मोहद्दीस थे जो हमें हदीसें सुनाया करते थे और जब अहादीस सुना चुकते सब लोग उठ कर चले जाते और सिर्फ चन्द लोग खड़े रह जाते तो उन में एक शख़्स अजीब तरह की बातें किया करता था। हम उसके पास जाकर बैठा करते थे। एक दिन वह नहीं आया तो हमने दोस्तों से पुछा कि वह क्यों नहीं आया? एक शख़्स ने जवाब दिया कि हां मै जानता हूं, उनका नाम हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो है। हम उस शख़्स के साथ आप रज़िअल्लाह अन्हो के मकान पर गए और दरवज़ा खटखटाया जब वह बाहर आए तो हम ने कहा कि ''ऐ भाई! आप रज़िअल्लाह अन्हो कहां रहे। हमारे पास क्यों नहीं आए?'' फ़रमाया: ''मै बर हंगी के सबब न आ सका।'' हमने कहा ''लो यह चादर ओढ़ लो'' फ़रमाया: ''नहीं क्यों कि मैने चादर ओढ़ ली तो इसे देखकर लोग मुझे सतायेंगे'' हमने इसरार करके उनको वह चादर ओढ़ा दी। जब वह चादर ओढ़ कर बाहर निकले लोग कहने लगे। कहो यह चादर कहां से उड़ाई? आप रज़िअल्लाह अन्हो ने हमसे फ़रमाया: ''देखा यह क्या कह रहे है।'' हमने लोगों से कहा तुम उनको क्यों सताते हो तुम्हारा उनसे क्या मतलब है कभी आदमी के पास कुछ कपड़ा नहीं होता तो वह बरहना भी रह जाता है और कभी होता है तो पहन भी लेता है फिर हम ने आवाज़ें कसने वालों

को खूब डांटा और धमकाया। मगर वह थे कि बाज़ नहीं आते। अलगर्ज़ वह अपनी ज़ाहिरी हालत की वजह से हर क़िस्म के तमसखुर और इसतेहज़ा का निशाना बनते थे और इसको नेहायत ख़न्दा पेशानी से बर्दाश्त फ़रमाते थे।

हज़रत हरम बिन हइयान रज़िअल्लाह अन्हो हज़रत अवैस क़रनी की ख़िदमत में

हज़रत दाता गंज बख़्श अली हिज्वेरी रहमतुल्लाह अलैहे अपनी तस्नीफ़ कश्फुल महजूब में फ़रमाते है कि हज़रत हरम बिन हय्यान रज़िअल्लाह अन्हो बुजुर्गाने तरीक़त में हुए है। साहबे मोआमलात थे। सहाब-ए-कराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन की सोहबत पाई थी। हज़रत अवैस क़रनी रज़ियल्लाह अन्हो की ज़्यारत के लिए क़रन गए मगर हज़रत अवैस रज़िअल्लाह अन्हो वहां से तशरीफ़ ले जा चुके थे। नाउम्मीद होकर मक्का मोअज्ज़मा वापस आए मालूम हुआ कि हज़रत अवैस क़रनी कूफ़ा में मोक़ीम हैं। हज़रत हरम रज़िअल्लाह अन्हो कूफ़ा तशरीफ़ ले गए मगर वहां हज़रत अवैस रज़िअल्लाह अन्हो को न पाया। बसरा को वापस आ रहे थे। तो देखा कि हज़रत अवैस क़रनी नहरे फोरात पर वज़ू फ़रमा रहे थे। वज़ू से फ़ारिग़ होकर रीशे मुबारक में कंघी करने लगे। हज़रत हरम रज़िअल्लाह अन्हो ने आगे बढ़ कर सलाम किया। हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने हज़रत हरम रज़िअल्लाह अन्हो का नाम लेकर सलाम का जवाब दिया। हज़रत हरम रज़िअल्लाह अन्हो ने पुछा, "आप ने मुझे कैसे जान लिया?"

हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने जवाब दिया, "मेरी रूह आपकी रूह को पहचानती है।" कुछ देर बाद हम बैठे रहे फिर हज़रत हरम रज़िअल्लाह अन्हो को रूख़्सत किया। हज़रत हरम रज़िअल्लाह

अन्हो फ़रमाते है कि हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने ज़ेयादा तर हज़रत उमर और हज़रत अली रज़िअल्लाह अन्होमा के बारे में बाते कीं। हज़रत उमर रज़िअल्लाह अन्हो से रिवायत की कि उन्हों ने पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम से सुना "अमल की ज्ज़ा नीयत पर मौकूफ़ है हर इन्सान को वही फल मिलता है जिस की नियत हो जिस शख़्स ने अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की ख़ातिर हिजरत की उसको उसका अज्र मिलेगा और जिस ने दुनिया की ख़ातिर हिजरत की या औरत की ख़ातिर हिजरत की कि उससे निकाह करे। ऐसे आदमी की हिजरत उन्ही दुन्यावी अश्या के लिए होगी" फिर हज़रत हरम रज़िअल्लाह अन्हो को फ़रमाया, " अपने दिल की हिफ़ाज़त करो।"

ख़ौफे इलाही

हज़रत हरम (रज़िअल्लाह अन्हो) बिन हैयान का बयान है कि मैंने हज़रत अवैंस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो से दरख़्वासत की कि आप रज़िअल्लाह अन्हो मुझे जनाबे रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की कोई हदीस सुनाइए कि मै आप रज़िअल्लाह अन्हो की ज़ुबान से सुनकर उसे याद कर लूं।

फ़रमाया, "मैने आक़ा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम को पाया न आप सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की सोहबते अक़्दस से बहर वर हुआ अल्बत्ता आप सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की ज़ेयारत का शरफ़ हासिल करने वालों को देखा है और तुम लोगों की तरह मुझे भी नबी आख़ेरूज़्ज़मान सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की हदीसें पहुचीं है मगर मैंने अपने लिए यह दरवाज़ह नहीं खोलना चाहता कि मोहद्दिस, क़ाज़ी या मुफ़्ती बनूँ। मै अपने अशग़ाल पूरे नही कर सकता दुसरो को क्या नसीहत करूं।" मैने अर्ज़ किया क़ुर्आन करीम की ही कुछ

आयात सुना दिजिए कि मुझे आप रज़िअल्लाह अन्हो की ज़ुबान मुबारक से कुर्आन सुनने की ख़्वाहिश है मैं अल्लाह तआला के लिए आप रज़िअल्लाह अन्हो को महबूब रखता हूं। मेरे लिए दुआ भी फ़रमाइए और कुछ वसीयत भी किजिए ताकि मैं उसे याद रखूं। मेरी दरखास्त सुनकर आप रज़िअल्लाह अन्हो ने मेरा हाथ पकड़ लिया और "अउज़ो बिल्लाहे मेनश्शैतानिर्रजीम" पढ़ कर चीख मार कर रोने लगे और फ़रमाया मेरे रब का ज़िक्र बुलन्द है उसका क़ौल सबसे ज़ेयादा बरहक़ है। सबसे ज़ेयादा सच्ची बात उसकी है और सबसे ज़ेयादा अच्छा कलाम उसका है। उसके बाद फ़रमाया "और हमने आसमान और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमेयान है उसको खेल के तौर पर नहीं बनाया अलबत्ता हमने उन्हें हक़ यानी हिक्मत व मक़्सद के साथ पैदा किया लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते बिला शुब्हा फ़ैसला का दिन यानी यौमे क़ेयामत उन सबसे हेसाब व किताब का वक़्ते वादा है उस दिन कोई दोस्त किसी के काम नहीं आएगा और न लोगों को कहीं से मदद ही पहुंचेगी मा सिवा उसके जिस पर अल्लाह तआला रहम फ़रमाए बेशक वह ग़ल्बा वाला रहम करनै वाला है।" तिलावत करके चीख मार कर ऐसे ख़ामूश हो गए कि मैं समझा कि बेहोश हो गए। कुछ देर के बाद फिर मुझसे फ़रमायाः " हरम रज़िअल्लाह अन्हो तुम्हारे वालिद फोत हो गए अन्क़रीब तुम्हें भी मरना है। अबू हय्यान मर चुके उनके लिए जन्नत है या दोज़ख़। ऐ इब्ने हय्यान रज़िअल्लाह अन्हो आदम अलैहिस्सलाम मर गए। हव्वा अलैहस्सलाम मर गईं। नूह अलैहिस्सलाम, इब्राहीम अलैहिस्सलाम, मूसा अलैहिस्सलाम मर गए। दाऊद अलैहिस्सलाम मर गए और ऐ इब्ने हय्यान रज़िअल्लाह अन्हो हमारे आक़ा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम भी पर्दा कर गए। अबू बक्र रज़िअल्लाह अन्हो भी गुज़र गए और आज मेरे भाई उमर बिन खत्ताब रज़िअल्लाह अन्हो भी अल्लाह को प्यारे हो गए। यह कह कर वाउम्राह

का नारा लगाया और उनके लिए दुआए रहमत की। हज़रत हरम रज़िअल्लाह अन्हो फ़रमाते है कि उस वक़्त तक हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो ज़िन्दा थे। और उन की ख़िलाफ़त का आख़िरी ज़माना था इस लिए मैने कहा अल्लाह आप रज़िअल्लाह अन्हो पर रहम करे। उमर बिन् खतताब रज़िअल्लाह अन्हो तो ज़िन्दा है। फ़रमाया: "अल्लाह तआला ने मुझै उनकी वफ़ात की ख़बर दी है और अगर तुम मेरी बात न समझो तो हमारा तुम्हारा शुमार मुर्दों में ही है। होने वाली बात हो चुकी।"

इतना फ़रमाने के बाद आप रज़िअल्लाह अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम पर दरूद भेजा और कुछ मोख़्तसर दुआएं पढ़ीं और फ़रमाया "हरम रज़िअल्लाह अन्हो अल्लाह की किताब, नेकूँ की राह अख़्तेयार करना और महबूबे रब्बुल्लआलमीन सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम पर दरूद सलाम पढ़ना यह मेरी वसीयत है। मैंने अपनी मौत की ख़बर दी और तुम्हारी मौत की ख़बर दी आइन्दा हमेशा मौत को याद रखना और एक लम्हा के लिए भी उससे ग़ाफ़िल न होना वापस जाकर अपनी क़ौम को डराना और अपने हम मज़हबो को नसीहत देना अपने नफ़्स के लिए कोशिश करना और ख़बर दार जमाअत का साथ न छोड़ना ऐसा न हो कि बेख़बरी में तुम्हारा दीन छूट जाए और क़ेयामत में तुम्हें आगे दोजख़ का सामना करना पड़े।" फिर फ़रमाया: "इलाही उस शख़्स का गुमान है कि तेरे लिए मुझसे मुहब्बत करता है और तेरे लिए ही उसने मुझसे मुलाक़ात की इस लिए ऐ अल्लाह तआला जन्नत में उसका चेहरा मुझे दिखाना (पहचान के लिए) और अपने घर दारूस्सलाम में मुझे उससे मुलाक़ात का मौक़ा अता फ़रमाना। यह दुनिया में जहां कहीं भी रहे, इसे अपने हिफ़्ज व अमान मे रखना उसकी खेती बाड़ी को उसके कब्जा में रहने देना और थोड़ी दुनिया पर ख़ुश रखना और दुनिया से तुने जो हिस्सा उसे दिया है वह उसके

लिए आसान करना और अपनी अताओं और नेमतों से उसे शाकिर बनाना और उसे जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाना।" इन दुआऊँ के बाद आप रज़िअल्लाह अन्हो ने फ़रमाया: "हरम रज़िअल्लाह अन्हो अब मै तुम्हें अल्लाह तआला के सुपुर्द करता हूं। अच्छा अस्सलाम अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातहु, अब मै तुम्हें आज के बाद न देखूं। मै शोहरत को नापसन्द करता हूं और तन्हाई और इज़्ज़तको दोस्त रखता हुं जब तक मै दुनिया में लोंगो के साथ ज़िन्दा रहुंगा इन्तेहाई ग़म व अलम में मुब्तला रहुंगा। इस लिए न तुम मेरे बारे में जुस्तजू करना अलबत्ता तुम्हारी याद मेरे दिल में रहेगी इसके बाद न मै तुम्हें देख सकुंगा न तुम मुझे देख सकोगे मुझे याद करते रहना और मेरे लिए दुआए ख़ैर भी करना मैं भी इन्शाअल्लाह तुम्हें याद रखुंगा और तम्हारे लिए दुआए ख़ैर करता रहुंगा। यह कह कर आप रज़िअल्लाह अन्हो एक सिम्त चले मै भी साथ हो लिया कि चन्द घड़ियां उनके साथ और मिल जांए लेकिन वह इस पर राज़ी न हुए और हम रोते हुए एक दुसरे से जुदा हुए इसके बाद मै ने उन्हें बहुत तलाश किया मगर किसी से उनकी ख़बर न मिल सकी। अल्लाह तआला उनपर रहमत नाज़िल फ़रमाए और उनकी मग़फ़ेरत फ़रमाए इस मुलाक़ात के बाद कोई हफ्ता नहीं गुज़रता जिसमें मै उन्हें एक मर्तबा ख़्वाब में न देखूं।

करामाते हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो

1. हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो की सबसे बड़ी करामत यही है कि अल्लाह तआला अपने महबूब सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के फ़ज़ायल व कमालात बयान करता है लेकिन सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम अपने आशिक़ हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के कमालात की मदह फ़रमाते और नफ्सुर्रहमान के लक़ब ये नवाज़ते है।

2. रिवायत है कि जब गज़वए उहद में सरकार सल्लल्लाहो अलैहे

व सल्लम के दांत मुबारक शहीद होने का हाल हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने सुना तो अपने जुम्ला दांत शहीद कर डाले तो दांत कुछ अर्सा बाद निकल आए और आप रज़िअल्लाह अन्हो ने फिर शहीद कर दिए। इसी तरह सात मर्तबा निकले और सात ही मर्तबा आप रज़िअल्लाह अन्हो ने अपने दांत शहीद किए।

3. एक रिवायत के मुताबिक़ जब हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने अपने तमाम दांत मुबारक शहीद कर दिए तो कोई भी सख़्त गेज़ा नही खा सकते थे। अल्लाह तआला को हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो की अपने महबूब सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के इश्क़ की यह अदा इतनी पसन्द आई कि अल्लाह तआला ने केले का दरख़्त पैदा फ़रमाया ताकि आप रज़िअल्लाह अन्हो को नरम गेज़ा मिल सके जबकि इससे क़ब्ल केले के दरख़्त या फल का वजूद ज़मीन पर न था। (वल्लाहो आलम)

4. मन्कूल है कि यमन में ऊंटों को भेड़िये मिलकर खा जाया करते थे मगर अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के ऊंटों की तरफ़ रूख़ भी नहीं करते थे। हांलाकि आप रज़िअल्लाह अन्हो दिन भर ऊंटों को चरता छोड़ कर इबादते इलाही में मसरूफ़ हो जाया करते थे और ऊंट फ़रिश्तों की निगहबानी में खुद ब खुद चरते रहते थे।

5. जब हज़रत उमर और हज़रत अली रज़िअल्लाह अन्होमा हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो से मुलाक़ात के लिए क़रन तशरीफ़ ले गए तो मालूम हुआ कि आप रज़िअल्लाह अन्हो वादिए अर्फा में ऊंट चराते है और गोशह नशीनी की ज़िन्दगी बसर फ़रमाते है। सहाब-ए-कराम रज़िअल्लाह अन्हुम ने सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की वसीयत के मुताबिक़ जुब्बे मुबारक हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो को इनायत फ़रमाया जो खुद ब खुद उड़ कर हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के जिस्म मुबारक पर चला गया और

सहाब-ए-कराम रज़िअल्लाह अन्हुम ने उम्मत की बख़्शिश के लिए दुआ करने का नबी पाक सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम का हुक्म पहुंचाया या तो हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने जुब्बा मुबारक को बोसा दिया और उसको दूर लेजाकर रख दिया और गुस्ल किया और फिर दो नफिल अदा किए उसके बाद सर बसोजूद होकर दुआ मांगनी शुरू की। हातिफ़ ग़ैबी से आवाज़ आई ऐ अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो निसफ उम्मत तुझको बख़्शी'' आप रज़िअल्लाह अन्हो ने सर मुबारक न उठाया फिर आवाज़ आई दो हिस्सा उम्मत बख़्शादी आप रज़िअल्लाह अन्हो ने फिर भी सर मुबारक सज्दा से न उठाया फिर हातिफ़ से आवज आई कि ''रबीआ और मुज़र की बकरियों के बालों के बराबर उम्मत तेरी सिफ़ारिश पर बख़्शा दी।'' आप रज़िअल्लाह अन्हो ने फिर भी सर न उठाया था कि सहाब-ए-कराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन ताख़ीर की वजह से उनके क़रीब तशरीफ़ लाए। आहट की वजह से हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने सर मुबारक उठा लिया और फ़रमाया: ''ऐ अमीरूल मोमेनीन रज़िअल्लाह अन्हो अगर आप रज़िअल्लाह अन्हो कुछ देर और तवक्कुफ फ़रमाते तो हक़ तआला से मै सारी उम्मत बख़्शावा लेता।''

6. हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो की शहादत के वक़्त हज़रत हरम बिन हय्यान रज़िअल्लाह अन्हो को शहादत की ख़बर दी और जब हज़रत हरम रज़िअल्लाह अन्हो ने मदीना शरीफ़ जाकर मालूम किया तो उसी वक़्त शहादत की तसदीक़ हो गई।

7. विसाल मुबारक के बाद एक पत्थर में खुदी हुई क़बर पहले से आप रज़िअल्लाह अन्हो के लिए तैयार थी। कफ़न के लिए दो जन्नती कपड़े और खुश्बू तक मौजूद थी। दफ़्न करने वाले इस्लामी मुजाहदीन जब वापसी पर उसी जगह से गुज़रे तो क़ब्र मुबारक ग़ायब थी।

8. हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने फ़रमाया कि केयामत के दिन हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो की शक्ल के सत्तर हज़ार फरिश्ते आप रज़िअल्लाह अन्हो को अपनी जिलो में लेकर जन्नत में दाख़िल होंगे।

9. एक मर्तबा हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो तशरीफ़ लाए उस जगह आप रज़िअल्लाह अन्हो की ख़िदमत में छः दरविशाने सादिक़ भी हाज़िर हुए। उस वक्त हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो की नज़र मुबारक उन छः दरवेशों पर पड़ी और फौरन उन दरवेशों की अश्काल, क़द व क़ामत तक बदल गई। इसके बाद हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो और उन छः दरविशाने हक़ में कोई शख़्स इम्तेयाज़ न कर सका चुनाचे जब वह छः दरवेश आप रज़िअल्लाह अन्हो से रूख़्सत हुए तो जिस मोक़ाम पर जिस दरवेश ने सकुनत अख़्तेयार की वहां के साकेनीन उस दरवेश को ही अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो समझे। इसी तरह जिस मोक़ाम पर जिस दरवेश ने वफ़ात पाई वहीं उसका मज़ार बना जो मज़ार हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के नाम से मशहूर हो गया। (सुहैल यमनी)

इस हेकायत के बारे में मोवल्लिफे किताब का कहना है कि अगरचे यह हेकायत मशाइख़ से साबित या मन्कुल नहीं है ताहम कुदरते एज़दी के मुताबिक़ है।

10. हज़रत हबीब रहमतुल्लाह अलैहे बिन सुहैल फ़रमाते है कि मैं चन्द सौदागरों के हमराह एक कश्ती में सवार था। कश्ती में अन्वाअ़ व अक़साम का माल लदा हुआ था अचानक बादोबारां ने हमे घेर लिया। कश्ती तुफ़ानी लहरों में फंस गई यहां तक कि पानी भरने से डुबने लगी। सब मुसाफिर अपनी ज़िन्दगी से मायुस हो गए। कश्ती में एक दिवाना सुरत शख़्स सवार था जिस ने ऊंट के बालों का कम्बल ओढ़ रखा था वह अपनी जगह से उठा और समन्दर की लहरों पर इस तरह चलने

लगा जिस तरह ज़मीन पर चल रहा हो वह गिर्दो पेश से बेख़बर व बेनयाज़ होकर नमाज़ में मशग़ूल हो गया। हमने फ़रियाद की, ऐ मर्दे हक़! हमारे लिए दुआ किजिए। उसने हमारी तरफ़ रूख़ किया और पुछा क्या मामला है? हमने अर्ज़ किया हमारा हाल तो आप के सामने है। फ़रमाया ''हक़तआला के साथ कुर्बत पैदा करो'' पुछा ''किस चीज़ के साथ?'' बोले तर्के दुनिया के साथ और बिस्मिल्लाह पढ़कर कश्ती से बाहर आजाओ। हमने तामील की पानी कश्ती के ऊपर से गुजर गया लेकिन हम महफूज व सालिम खड़े थे फ़रमाने लगे अब तुम दुनिया से आज़ाद हो सबने पुछा '' ऐ मर्दे दरवेश! आप कौन हैं?'' फ़रमाया ''मेरा नाम अवैस (रज़िअल्लाह अन्हो) है।'' हमने पुछा कि कश्ती में तो मदीना मुनव्वरा के फ़क़ीरों का सामान भी लदा था जो मिस्र के एक साहबे सरवत ने भेजा था क्योंकि मदीना में आज कल क़हत पड़ा हुआ है। फ़रमाया अगर अल्लाह तआला तुम्हारा माल तुम्हें दे दे तो क्या तुम सारा माल मदीना के फ़क़ीरों में तक़सीम कर दोगे? सबने कहा हां आप रज़िअल्लाह अन्हो ने सत्हे आब पर दो रकअत अदा की और दुआ फ़रमाई। हम क्या देखते हैं कि कश्ती मआ समान पानी से बाहर उभरी हमने उसे पकड़ लिया फिर हम सही सलामत मदीना शरीफ़ जा पहुंचे तो हम ने हस्बे वादा सारा माल मदीना के मुहताजों और फ़क़ीरों में बांट दिया। (ज़हरतुल रियाज़)

आप रज़िअल्लाह अन्हो की नमाज़

हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो से किसी शख़्स ने पुछा कि नमाज़ किस तरह अदा करनी चाहिए? फ़रमाया मै तो यह चाहता हुं कि मै नमाज़ अदा करूं एक ही सज्दे में रात गुज़ार दुं। और सुब्हान रब्बीयल आला पढ़-पढ़ कर बे खुद हो जाऊं। आप रज़िअल्लाह अन्हो से नमाज़ में खोशू के मुतअल्लिक़ सवाल किया गया तो फ़रमाया कि अगर कोई शख़्स नमाज़ पढ़ रहा हो और उसे कोई दुसरा शख़्स नेज़ा

मारे और उसे ख़बर तक न हो तो यह नमाज़ का खुश्अ होगा।

एक और मौक़ा पर फ़रमाया: " अगर आदमी आसमानों और ज़मीनों के बराबर अल्लाह तआला की इबादत करे तो अल्लाह तआला उसकी इबादत को उस वक्त तक क़बूल न करेगा जब तक वह बन्दा अल्लाह पर कामिल यक़ीन न रखे।" अर्ज़ किय गया अल्लाह तआला पर यक़ीन रखने का मस्नून और मुसतहसन तरीक़ा क्या है? फ़रमाया: जो चीज़ तम्हारे लिए मोक़र्रर की जा चुकी है उसकी फ़िक करनी छोड़ दो। अल्लाह तआला की इबादत करते वक्त दुनिया से इस तरह मुंह मोड़ लो जिस तरह इन्सान मौत के वक्त मुंह मोड़ता है और यह चीज़ उस वक्त हासिल होगी जब इन्सान मौत को हर वक्त अपनी शह रग से क़रीब तर समझे अगर बन्दा ऐसा हो जाए तो वह अल्लाह तआला पर कामिल यक़ीन रखने वाला बन जाएगा और उसकी इबादत क़बूल होगी और उसे अल्लाह तआला की कुर्बत नसीब होगी।

अमर बिलमारूफ़ व नही अनिल मुनकर

उज़लत पसन्दी और तन्हा नशीनी के बावजूद आप रज़िअल्लाह अन्हो अमर बिल मारूफ़ व नही अनिलमुन्कर के फ़रीज़ा से कभी ग़ाफ़िल न रहे। उसी फ़रिज़ा की अदायगी के बाअिस उन्हें लोगों की मोख़ालिफ़त का सामना करना पड़ता था।

हज़रत अबुल अहवस रहमतुल्लाह अलैहे फ़रमाते है कि मेरे एक साथी का बयान है कि क़बीला मुराद का एक शख़्स आप रज़िअल्लाह अन्हो के पास गया और सलाम के बाद पुछा अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो का क्या हाल है? फ़रमाया: "अल्हम्दोलिल्लाह" ज़माने का आप रज़िअल्लाह अन्हो के साथ कैसा बरताव है" फ़रमाया: " यह सवाल उस शख़्स से करते रहो जिस को शाम के बाद सुबह तक और सुबह के बाद शाम तक ज़िन्दा रहने का यक़ीन नहीं? ऐ मेरे क़बीला के भाई मौत ने किसी शख़्स के लिए ख़ूशी का कोई मौक़ा ही बाक़ी नही रहने

दिया। ऐ मेरे मुरादी भाई! अल्ल्लाह के कामों में मोमिन के फ़र्ज़ की अदायगी ने उसका कोई दोस्त बाक़ी नहीं रहने दिया। अल्लाह की क़सम! चुंकि हम लोगों को अच्छे काम की तलक़ीन करते है और बुरे कामों से रोकते हैं। इसलिए उन्होंने हमें अपना दुश्मन समझ लिया है और उस काम में उन्हें फ़ासिक़ मददगार मिल गए है जो हम पर तोहमतें रखते है लेकिन अल्लाह की क़सम उनका यह सलूक मुझे हक़ बात कहने से बाज़ नही रख सकता।"

मोजाहेदात

हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने बड़े-बड़े मोजाहेदात किये सारी-सारी रात जागते रहते। मामूल था कि एक शब क़याम में गुज़ारते दूसरी रूकूअ में और तीसरी सज्दा में। अकसरात के साथ दिन भी इबादत में गुज़र जाता। मशहूर ताबअी हज़रत रबीअ रहमतुल्लाह अलैहे बिन खैसम फ़रमाते हैं कि एक दिन मै उनसे मिलने गया देखा कि वह नमाज़े फ़ज्र में मशग़ूल है। मै इन्तेज़ार करने लगा कि वह फ़रिग़ हों तो मुलाक़ात करूं। नमाज़ से फ़ारिग़ होकर वह तसबीह व तहलील में मशग़ूल हो गए और ज़ोहर तक बराबर मसरूफ़ रहे फिर ज़ोहर से असर और असर से मग़रिब तक यही हाल रहा। मैंने ख़्याल किया शायद मग़रिब के बाद इफ़तार के लिए फ़रिग़ हों वह बराबर इशा तक ज़िक्र में मशग़ूल रहे फिर सुबह तक यही कैफ़ियत रही। तीन दिन इसी तरह गुज़र गये। चौथी रात थोड़ी देर के लिए सोए और थोड़ा सा खाना तनाउल फ़रमाया फिर इस्तिग़फ़ार करने लगे कि "ऐ अल्लाह तआला सोने वाली आंख से और न भरने वाले पेट से तेरी पनाह मांगता हुं।" मैने यह हाल देखा तो अपने दिल में कहा मेर लिए इतना काफ़ी है चुनाचे मै उनसे मिले बेग़ैर वापस चला आया।

इल्मे ज़ाहिर

हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो सरताज व इमामे ताबईन है उनकी ज़ात में जुम्ला फ़ज़ायल व कमालात इकठ्ठे नज़र आते है लेकिन फिर भी आप रज़िअल्लाह अन्हो उल्माए ज़ाहिर के ज़ुम्रा में शुमार नही किये जाते। हत्ता कि आप रज़िअल्लाह अन्हो से कोई रिवायत तक मरवी नही है क्योंकि आप रज़िअल्लाह अन्हो यह बात खुद पर खोलना ही नहीं चाहते थे। जैसा कि हज़रत हरम रज़िअल्लाह अन्हो के साथ मुलाक़ात के दौरान जब हज़रत हरम रज़िअल्लाह अन्हो ने दरख़्वास्त की कि, "मुझे रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की कोई हदीस मुबारक सुनाइए ताकि मै उसे याद कर लूं।" तो आप रज़िअल्लाह अन्हो ने जवाब में फ़रमाया " मैने सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम को पाया, न आप सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की सोहबत से वहर वर हुआ अल्बत्ता आप सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की ज़ियारत का शर्फ़ हासिल करने वाले खुश नसीबों को देखा और तुम लोगों की तरह मुझे भी सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की अहादीस पहुंची है लेकिन मै अपने लिए यह दरवाज़ा खोलना नहीं चाहता कि मोहद्दीस, क़ाज़ी या मुफ्ती बनू। मै अपने अशगाल ही से फ़रागत नही पाता" इसकी एक वजह यह भी थी कि आप रज़िअल्लाह अन्हो शोहरत नापसन्द फ़रमाते थे और मस्नदे इल्म पर बैठने से शोहरत हासिल होने का अन्देशा होता है।

इल्मे बातिन

ताबईन मै आप रज़िअल्लाह अन्हो उलूमे बातिन का सर चश्मा हैं और सुफ़ियाए कराम के बे शुमार सलासिल आप रज़िअल्लाह अन्हो की ज़ात बा बरकात तक मुन्तही होते है।

तीस साल से क़बर में बैठे शख़्स से मुलाक़ात

हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो को मालूम हुआ कि एक शख़्स गुज़शता तीस सालों से एक क़बर में बैठा हुआ है और उसने कफ़न को अपनी गरदन के इर्द गिर्द लपेट रखा है और हर वक़्त गिरया व ज़ारी में मशग़ूल रहता है। आप रज़िअल्लाह अन्हो उसके पास तशरीफ़ ले गए और उसको कहा कि ऐ शख़्स रो-रोकर तेरी आंखें खुश्क़ हो गई है जबकि इस क़बर और कफ़न ने तुझे खुदा की याद से ग़ाफ़िल कर दिया है और यह दोनों चीज़ें राह का पर्दा हैं। उस शख़्स ने आप रज़िअल्लाह अन्हो की बातों की शीरीनी और रौशनी में अपनी अन्दर की कदोरत को महसूस किया और एक ज़ोर दार चीख़ मार कर उसी क़ब्र में सर्द हो गया।

भेड़ और रोटी का वाक़ेया

एक मर्तबा हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो तीन रोज़ से भूके थे। आप रज़िअल्लाह अन्हो के पास खाने के लिए कोई चीज़ नहीं थी और न ही कोई पैसा था। अचानक आप रज़िअल्लाह अन्हो को एक दिर्हम मिला। आप रज़िअल्लाह अन्हो ने ख़्याल किया कि हो सकता है कि यह दिर्हम किसी का गिर पड़ा हो चुनांचे आप रज़िअल्लाह अन्हो ने दिर्हम को वहीं पड़ा रहने दिया और आगे चल दिये। फिर आप रज़िअल्लाह अन्हो ने सोचा कि अगर कोई चीज़ खाने को नही मिलती तो घास ही खा लेता हुं अभी यह सोच ही रहे थे कि एक भेड़ को देखा कि जो एक ताज़ा गर्म रोटी ला रही थी। भेड़ ने रोटी ला कर आप के आगे रख दी। आप रज़िअल्लाह अन्हो ने सोचा कि शायद यह रोटी किसी और की मिल्कियत होगी इस लिए आप रज़िअल्लाह अन्हो ने उस रोटी को हाथ तक नहीं लगाया। उस भेड़ ने ज़ुबाने हाल से अर्ज़ किया, "ऐ अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो जिस खुदा के आप रज़िअल्लाह अन्हो बन्दे है मै भी उसी की मख़्लूक़ हुं

और आप रज़िअल्लाह अन्हो अल्लाह तआला पर यक़ीन करें कि उसने यह रोटी खुद भेजवाई है। यह सुनते ही हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने रोटी खाना शुरू कर दी।

मेरा हाथ हाजत रवा के हाथ में है

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो ने अपने दौरे खे़लाफ़त में हज़रत अवैस क़रनी के नाम यह पैग़ाम भेजा कि " अगर आप रज़िअल्लाह अन्हो की इजाज़त हो तो मैं कूफ़ा के गवर्नर को लिखूं कि वह आप रज़िअल्लाह अन्हो का ख़ास ख़्याल रखें" हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने जवाब में फ़रमाया, "मैं खुसूसीयत के साथ ज़िन्दगी बसर करने के सख़्त ख़िलाफ हुं। मुझे किसी चीज़ की हाजत नहीं मेरा हाथ हाजत रवा के हाथ में है मुझे तो बस यादे इलाही से ग़र्ज़ है और वह मैं कर रहा हुं।" उसके बाद आप ने कूफ़ा भी छोडा दिया और किसी गुमनाम इलाक़े की तरफ़ निकल गए जहां आप रज़िअल्लाह अन्हो को न कोई मिल सके और न पहचान सके।

हल्क़ए ज़िक्र

हज़रत असीर बिन जाबिर रहमतुल्लाह अलैहे फ़रमाते है कि हम चन्द लोग कूफ़ा में ज़िक्र व शुगल का एक हल्क़ा लगाया करते थे। हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो भी हमारे साथ शरीक़ हुआ करते थे।

हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो की शख़्सियत में शक

ख़ैरूत्ताबईन हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के बारे मे जहां बे शुमार फज़ायल व करामात की रिवायात मिलती है वहां कुछ बयानात उनके वजूद को ही मुश्तबह कर देते है। जैसा कि इब्ने अदी का बयान है कि हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैहे आप रज़िअल्लाह अन्हो

के वजूद के मुन्किर हैं।

लेकिन बहुत से उलमा व मोहद्दसीन उन चन्द कमज़ोर रवायतों को कोई हैसियत नहीं देते जो हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो की ज़ाते मुबारक के वजूद ही की मुन्किर हैं। जिन किताबों में ऐसी रिवायत दर्ज है उनमें सनद मौजूद नही इस लिए मोहददेसाना ओसूल से वह साकितुल एतेबार और नाक़ाबिले इस्तेनाद हैं।

दूसरी तरफ़ ग़ौर किया जाए तो सही मुस्लिम तक मैं उनके फ़ज़ायल मिलते हैं बल्कि हदीस की किताबों मसलन मुसनद अहमद बिन हमबल, सही बुख़ारी, दलायल बैहकी, अबू नोएम, अबू याला, मुसतदरक हाकिम वग़ैरह में आप रज़िअल्लाह अन्हो के हालात व फ़ज़ायल का बहुत ज़िक्र मिलता है।

शहादत

शाने हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो को जब तक लोगों ने न पहचाना था तब तक वह आम लोगों में नज़र आते थे लेकिन जब से उनकी हक़ीक़त आशकार हुई वह ऐसे रूपोश हुए कि फिर किसी ने नहीं देखा। कहा जाता है कि वह जंगे सिफफीन में हज़रत अली कर्रमल्लाह वजहहू की हेमायत में लड़ते हुए शहीद हुए थे और एक रिवयात के मुताबिक़ आप रज़िअल्लाह अन्हो ने आज़रबायेजान से वापसी पर राह में पेट के मर्ज़ की वजह से वफ़ात पाई और आप रज़िअल्लाह अन्हो का यह सफ़र सफ़रे जेहाद था। गोया दोनों रिवायातं के मुताबिक़ शर्फ़े शहादत से मुशर्रफ हुए। कुछ रिवायात के मुताबिक़ मुल्के यमन के शहर ज़ुबैद के बाहर शुमाल की जानिब आप रज़िअल्लाह अन्हो का मज़ार मुबारक मौजूद है।

एक मशहूर रिवायत है कि आप रज़िअल्लाह अन्हो ने फोरात के किनारे आवाज़े तबल सुनी, आने जाने वालों से इस्तिफ़सार किया यह क़िस्सा क्या है? किसी ने बताया कि अमीरूल मोमेनीन हज़रत अली

कर्रमल्लाह वजहहू हज़रत अमीर मोआविया रज़िअल्लाह अन्हो के ख़िलाफ़ जंग के लिए तशरीफ ले जा रहे हैं। आप रज़िअल्लाह अन्हो हज़रत अली कर्रमल्लाह वजहहू के लश्कर की सिम्त चल पड़े।

आप रज़िअल्लाह अन्हो की आमद से क़ब्ल हज़रत अली कर्रमल्लाह वजहहू ने जब हाज़रिन से फ़रमाया कि कौन मेरे हाथ पर मौत के लिए बैअत करता है तो निनानवे आदमियों ने बैअत की तो आप रज़िअल्लाह अन्हो ने फ़रमाया: "एक कम्बल पोश आएगा तो यह तादाद पुरी हो जाएगी। इधर अली कर्रमल्लाह वजहहू यह बात फ़रमा रहे थे। उधर हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो वहां आ पहुंचे। हज़रत अली कर्रमल्लाह वजहहू आप रज़िअल्लाह अन्हो को देख कर बेहद मस्रूर हुए। आप रज़िअल्लाह अन्हो ने हज़रत अली कर्रमल्लाह वजहहू के दस्ते मुबारक पर जान कुर्बान करने की बैअत फ़रमाई। मैदाने जंग मं निकले और जामे शहादत नोश फ़रमाया।

दूसरी रिवायत के मुताबिक़ आप रज़िअल्लाह अन्हो, उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो की ख़ेलाफ़त के आख़िरी दिनों में आज़र बईजान के महाज़ पंर जेहाद में हिस्सा लेने के लिए तशरीफ़ ले गए आप रज़िअल्लाह अन्हो उन दिनों इस्हाल की बिमारी में मुब्तला थे। रास्ते में वफ़ात पाई। आप रज़िअल्लाह अन्हो के थैले से दो ऐसे कपड़े मिले जो दुनिया के लिबासों में से नज़र न आते थे उनसे कफ़न तैयार किया गया इतने में लश्करे मोजाहेदीन को कुछ फासिले पर एक क़ब्र तैयार मिली नज़दीक ही मोअत्तर पानी और ख़ुश्बू मौजूद पाए गए। मोजाहेदीन ने आप रज़िअल्लाह अन्हो को उसी पानी से गुस्ल दिया, कफ़न पहनाया, ख़ुश्बू लगाई, नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई, दफ़्न करके महाज़ को रवाना हुए। वापसी पर लश्करे इस्लाम फिर उधर से गुज़रा तो वहां क़ब्र थी न कोई निशान।

वेसाल मुबारक के बारे में दिगर रिवायात

1. हज़रत मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैहे ने अपनी तसनीफ़ मअदनुलअदनी में और हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मोद्दीस देहलवी रहमतुल्लाह अलैहे शरहे मिशकात में इब्ने असाकिर की रिवायत तहरीर फ़रमाते है कि हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो हज़रत अली कर्रमल्लाह वजहहू के अहदे ख़िलाफ़त में मदीना मुनव्वरह तशरीफ़ लाए और आप कर्रमल्लाह वजहहू की तरफ़ से जंगे सिफफीन में लड़कर शहीद हुए। शहादत के बाद देखा गया तो आप रज़िअल्लाह अन्हो के जिस्म मुबारक पर चालीस से ज़ायद ज़ख़्म थे।

2. शरह सही मुस्लिम में है कि हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो जंगे सिफफीन में शहीद हुए।

3. तज़्केरतुल औलिया और मिरअतुलअसरार में है कि जब हज़रत अली कर्रमल्लाह वजहहु जंगे जोमल में तशरीफ़ ले जा रहे थे तो हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने आप रज़िअल्लाह अन्हो से आकर बैअत की थी और फिर जंगे सिफफीन में हज़रत अली कर्रमल्लाह वजहहु की तरफ़ से लड़ते हुए जामे शहादत नोश फ़रमाया।

4. मजालेसुल्मोमेनीन में है कि एक रोज़ हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो दरियाए फ़ोरात पर बैठे वज़ू फ़रमा रहे थे कि तबले जंग की आवाज़ सुनकर किसी से दरयाफ्त फ़रमाने लगे और जब मालूम हुआ कि शाहे वेलायत हज़रत अली कर्रमल्लाह वजहहु की सिपाह के तबल की आवाज है। जो हज़रत मुआविया रज़िअल्लाह अन्हो से लड़ने जा रहे है तो आप रज़िअल्लाह अन्हो ने फ़रमाया कि मेरे नज़दीक अमीरूल मोमेनीन हज़रत अली कर्रमल्लाह वजहहु की इत्तेबाअ से बढ़ कर कोई इबादत नहीं और यह कहते हुए दौड़कर हज़रत अली कर्रमल्लाह वजहहु के लश्कर की सफ़ में खड़े हो गए और सिफफीन के किसी मआरिका में लड़ते-लड़ते जामें शहादत नोश फ़रमाया।

5. तोहफतुल अखयार में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास, रज़िअल्लाह अन्हो से मन्कूल है कि जब मै अमीरूल मोमेनीन हज़रत अली कर्रमल्लाह वजहहु की ख़िदमते अक्दस में पहुंचा तो देखा कि कूफ़ा और अतराफ़ व जवानिब के लश्कर आप कर्रमल्लाह वजहहु की ख़िदमत में आ-आ कर जमा हो रहे हैं। एक रोज़ शेरे ख़ुदा अली मुर्तुज़ा कर्रमल्लाह वजहहु ने फ़रमाया कि आज मेरे पास बीस लश्कर जमा हो गए हैं। और हर लश्कर में एक-एक हज़ार मर्द होंगे। यह बात मुझे हैरत अंगेज महसूस हुई। हज़रत अली कर्रमल्लाह वजहहु ने मेरा ख़तरा अपनी फ़रास्ते बातनी से मालूम कर लिया और उसी वक्त हुक्म दिया कि दो नेज़े इस जंगल में गाड़ दे ताकि हर शख़्स जो हमारे लश्कर में शामिल होना चाहे वह इन नेज़ों के बीच में से गुज़रे और फिर एहतेयात के साथ लश्करियों को शुमार करते रहें। जब मग़रिब का वक्त क़रीब आया तो उस वक्त तक सिर्फ एक शख़्स की कमी रह गयी थी। जब किसी ने हज़रत अली कर्रमल्लाह वजहहु से अर्ज़ किया कि एक शख़्स अभी कम है तो आप रज़िअल्लाह अन्हो ने फ़रमाया कि अब जो शख़्स आएगा वह मर्दे कामिल होगा और तादाद पुरी कर देगा। ज़ेयादा देर न गुज़री थी कि मोजाहेदीन ने देखा कि एक बुढ़ा शख़्स पैदल चला आ रहा है और ज़ादेराह कमर से बंधा हुआ है पानी का मश्कीज़ा गले में लटका हुआ है वह शख़्स नेहायत दुबला पतला और कमज़ोर है जबकि चेहरा ज़र्द और गर्द आलूद है।

मोजाहेदीन आप रज़िअल्लाह अन्हो को हज़रत अली कर्रमल्लाह वजहहु की ख़िदमत में लाए। आप रज़िअल्लाह अन्हो ने सलाम किया। हज़रत अली कर्रमल्लाह वजहहु के दरयाफ्त करने पर आप रज़िअल्लाह अन्हो ने अपना नाम अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो बताया और फ़रमाया: "आप कर्रमल्लाह वजहहु अपना दस्ते मुबारक मेरी तरफ़ बढ़ाइए ताकि आप कर्रमल्लाह वजहहु के दस्ते हक़ शनास पर बैअत

कर सकुं। हज़रत अली कर्रमल्लाह वजहहु, ने बैअत होने की वजह दरयाफ्त फ़रमाई तो आप रज़िअल्लाह अन्हो ने फ़रमाया कि "जंग में आप रज़िअल्लाह अन्हो कर्रमल्लाह वजहहु की मदद करने और आप कर्रमल्लाह वजहहु पर अपना सर फिदा करने के लिए बैअत करना चाहता हुं क्योंकि जब एक दिन मरना ज़रूरी है तो फिर आप कर्रमल्लाह वजहहु पर ही क्यों न अपनी जान निसार कर दुं।"

इस रिवायत को अगर सामने रखा जाए तो एक बात वाजेह हो जाती है कि हज़रत अली कर्रमल्लाह वजहहु ने हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो से जंगे सिफफीन के मौक़ा पर बैअत से क़ब्ल मुलाक़ात पर नाम पुछा और आप कर्रमल्लाह वजहहु, हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो को पहचानते नहीं थे वर्ना तआरुफ की ज़रूरत नही थी और ऐन मुम्किन है कि क़रन में हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो ने अकेले हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो से मिलने जाने की रिवायत दुरूस्त हों क्योंकि इस मुलाक़ात के दौरान जो गुफ्तगू हम तक पहुंची है उसमें हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो के हमराह मौजूद हों मगर सवालात न पुछे हों। अमीरूल मोमेनीन के अदब को सामने रखते हुए कोई बात न की हो और सिर्फ गुफ्तगू ख़ामुशी से समाअत फ़रमाई हो और यह भी ऐन मुम्किन है कि दोनों सहाब-ए-कराम रज़िअल्लाह अन्होमा ने हज़रत अवैस क़रनी से गुफ्तगू की हो मगर वह रिवायत के ज़रिए हमतक न पहुंच सकी हो।

अलगर्ज़ हज़रत अवैस क़रनी की हज़रत अली कर्रमल्लाह वजहहु से जंगे सिफफीन से क़ब्ल मुलाक़ात से तो यही ज़ाहिर होता है कि हज़रत अली कर्रमल्लाह वजहहु हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो के हमराह हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो से मुलाक़ात की ग़र्ज़ से क़रन तशरीफ़ नही ले गए थे। (वाल्लहो आलम)

6. हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सोयोती रहमतुल्लाह अलैहे

शरहुस्सुदूर में फ़रमाते है कि इब्ने असाकिर ने हज़रत अता खुरासानी रहमतुल्लाह अलैहे से रिवायत फ़रमाई है कि "तहकीक़ हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो मर्ज़े इस्हाल की बिमारी में बहालते सफ़र फ़ोत हुए और उस वक्त आप रज़िअल्लाह अन्हो के बदन मुबारक पर सिर्फ दो कपड़े थे जो दुनियावी कपड़ों में से न थे।

7. एक रिवायत के मुताबिक़ जिन कपड़ों में हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो को कफ़न दिया गया वह ऐसे कपड़े न थे जिनको आदमी पहनतें है फिर दो आदमी उनकी क़ब्र खोदने गए तो वहां पहले से तैयार खुदी हुई क़ब्र पाई। लोग क़ब्र में दफ़्न करके वहां से चले गए फिर जो वहां गए तो क़ब्र का निशान न मिला।

8. आशिके़ रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम हज़रत मौलाना जामी रहमतुल्लाह अलैहे शवाहेदुन्नबूवत में हज़रत हरम बिन हययान रज़िअल्लाह अन्हो की रिवायत नक़ल फ़रमाते है कि हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो आज़र बाइजान में ग़ज़ा को गए थे और वहीं उन्होंने इन्तेक़ाल फ़रमाया था। आप रज़िअल्लाह अन्हो के हमसफ़र अहबाब ने चाहा कि क़ब्र खोदें मगर एक क़ब्र पत्थर में खुदी हुई पाई गई उसी क़ब्र में दफ़्ना दिया।

हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने एक रिवायत के मुताबिक़ 3 रजब 22 हि0 में वफ़ात पाई जबकि कशफ़ुलमहजूब के मुताबिक़ 13 रजब 37 हि0 में वेसाल मुबारक हुआ।

हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाहो अन्हो का मज़ार मुबारक

तहक़ीक़ात के मुताबिक़ हज़रत अवैस क़रनी के चार मज़ार पाए जाते हैं।

1. बन्दरगाह ज़ुबैद में।
2. ग़ज़नी में।
3. बग़दाद शरीफ़ में।
4. नवाहे सिन्ध हुदुदे ठठ पाकिस्तान में।

जबकि कुछ मुहक़्क़ेक़ीन के मुताबिक़ हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के सात मज़ारात हैं। जिनमें से चार वह है जिनका ज़िक्र ऊपर हुआ और तीन के मोक़ामात का सही इल्म नहीं।

सहाबी या ताबअी

अहादीस मुबारक: की रोशनी में उलमाए कराम की इत्तफ़ाक़ राय है कि हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाहो अन्हु ताबअी है लेकिन बाज़ हज़रात ऐसी रिवायत पेश करते है जिस से आप रज़िअल्लहो अन्हु के सहाबी होने की दलील ज़ाहिर होती है।

हज़रत सैयद महमूद बिन मुहम्मद बिन अली शौख़ानी क़ादरी मदनी रहमतुल्लाह अलैहे हयातुल ज़ाकेरीन में हज़रत सैयद अब्दुल वहाब रहमतुल्लाह अलैहे की रेवायत नक़ल फ़रमाते है कि "हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाहो अन्हु सरकार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में बारहा हाज़िर हुए और ग़ज़्वए उहद में भी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास तशरीफ़ लाए थे।" उसकी दलील यह पेश की है कि हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाहो अन्हु का अपना क़ौल है कि "खुदा की क़सम ग़ज़्वए उहद में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के आगे के चारों दन्दाने मुबारक शहीद हुए ही थे कि मैंने भी अपने चार दांत आगे के तोड़ डाले और जूंही आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का चेहरा मुबारक ज़ख़्मी हुआ मैंने भी अपना मुंह नोच लिया (ज़ख़्मी कर लिया) और जिस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की कमर मुबारक झुकी मैंने भी अपनी कमर झुकाली।" लवामेउल अन्वार फी तब्क़ातिअख़्यार में भी इसी तरह की तसरीह दर्ज है।

कुछ हज़रात की राय है कि यह कैसे मुम्किन है कि ऐसा आशिक़ ज़ार और इतना बड़ा वली कामिल शराअे इस्लाम से नावाक़िफ़ हो जबकि शरअी मस्ला है कि सरकार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज़ेयारत और लम्हा भर की सोहबत पर ग़ौसियत और क़ुत्बियत के

तमाम मरातिब व कमालात नेछावर और क़ुर्बान होते है तो फिर वह किस तरह उस मन्सबे आला को तर्क करना गवारा कर सकते है वालिदा माजिदा मानेअ थीं या उनकी ख़िदमत अहम फ़रिज़ा था तो उसके हज़ारो शरअी अस्बाब व अेलल आप रज़िअल्लाहो अन्हु के सामने होंगे सहाबा कराम रिज़्वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन के साथ तहक़ीक़ी गुफ़्तगू और ऐनी सवालात जो आप रज़िअल्लाहो अन्हु ने सहाब-ए-कराम रिज्वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन से किए यह भी उसी तरफ़ निशानदही करतें हैं कि आप रज़िअल्लाहो अन्हु ने सरकर सल्लल्लाहे अलैहे वसल्लम की सोहबत पाई और आक़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़ूब जी भर कर ज़ेयारत की। ज़ेयारत तो ज़रूरी की है मगर यह भी तो ऐन मुम्किन है कि जिस तरह सरकार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम लोगों की नज़रों से पोशीदा यमन में बैठे अपने आशिक़ को देख लिया। उसी तरह मख़्फ़ी तौर पर अपने आशिक़ को भी ख़ूब ज़ेयारत करादी हो।

अल्ग़र्ज़ अहादीस मुबारकः और जुमहूर उलमाअ व मशायख़ की राय और नक़ली दलायल को सामने रखते हुए यही नतीजा निकलता है कि हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाहो अन्हु ताबअी हैं।

मन्सबे फ़िनाफ़ीर्रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम

हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाहो अन्हु ने खुद को फ़िनाफ़िर्रसूल कर दिया था। आप रज़िअल्लाहो अन्हु ने बातिनी तौर पर अपने महबूब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की कई बार ज़ेयारत का शर्फ़ हासिल किया बल्कि अक्सर मशायख़ की राय है कि जब कोई खुशनसीब आशिक़ फ़िनाफ़िर्रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का अज़ीम मन्सब पा लेता है तो सरकार दोआलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का जल्वा हर वक़्त उसके सामने रहता है। इसी लिए हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाहो अन्हु भी हर वक़्त सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहे

वसल्लम के अहवाल की जुस्तुजू में रहते और अपनी हर-हर अदा को सुन्नते मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मुताबिक़ ढालने की सअी में लगे रहते। जुहद व क़नाअत, रेयाज़त और इत्तेबाओ रसूल की आप रज़िअल्लाहो अन्हु ने ऐसी मिसाल क़ायम फ़रमाई कि आज तक तमाम मुसलमानों के लिए बायसे रश्क है।

बरोज़े क़ेयामत मेरा दामन पकड़े

हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाहो अन्हु फ़रमाते है कि जो शख़्स हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़ेगा। अल्लाह तआला उसे बहिश्त अता फ़रमाएगा अगर न गया तो वह बरोज़े क़ेयामत मेरा दामन पकड़े।

दुआ यह है : बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

या मन ला यतहोरोहु ताअ़ती वला तज़ुर्रोहु मासीयती फहब ली मा ला यतहोरोक वग़फिरली मा ला यज़ुर्रोक या अर्हमर राहेमीन।

सिलसिलाए अवैसीया

हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाहो अन्हु को रूहानियत और तसव्वुफ़ की दुनिया में बहुत आला मुक़ाम हासिल है और सुफ़ियाए कराम के बहुत से सिलसिले आप रज़िअल्लाहो अन्हु तक पहुंचते और मुकम्मल होते हैं। बाज़ मशायख़ की राय है कि तमाम सलासिल किसी न किसी तरह हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाहो अन्हु से ज़रूर तअल्लुक़ रखते हैं। मगर एक तब्क़ए फ़िक्र का ख़्याल है कि हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाहो अन्हु का सिलसिला दोसरे तमाम सलासिल से अलग है जिसे सिलसिलए अवैसिया कहा जाता है। इसतेलाहे सुफ़िया में अवैसी आम तौर पर उस शख़्स को कहा जाता है जो इततेबाए रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बदौलत बराहे रास्त बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त से फ़ैज़ हासिल कर रहा हो या करने के क़ाबिल हो जाए या किसी ऐसे पीर कामिल से फ़ैज़्याब हुआ हो जिसे दरमेयानी वाबस्तों के बेग़ैर ही वलायत मिल गई हो।

हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मोहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के फ़रमान के मुताबिक़ सिलसिलए अवैसिया के सात बुनियादी ओसूल हैं।

1. इत्तेबाए रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम।

2. दुनिया में रहकर दुनिया से दिल न लगाना।

3. मतलब के बेग़ैर और हक़ के ख़िलाफ़ कोई बात जुबान से न निकाले।

4. यादे इलाही से किसी वक़्त भी ग़ाफ़िल न होना।

5. हर वक़्त अल्लाह तआला को हाज़िर व नाज़िर जानना।

6. हर हाल में राज़ी ब रज़ा और ग़ुस्सा को पी जाना।

7. ग़ीबत से इज्तेनाब करना।

इर्शदाते हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाहो अन्हु

● जो शख़्स तीन चीज़ों को क़रीब रखता है दोज़ख़ उसकी गर्दन से भी ज़ेयाद क़रीब है।

1. अच्छा खाना
2. अच्छा लिबास
3. दौलत मन्दों की सोहबत मे बैठना

● यह तीनो ऐसे आमाल हैं जिन से कोई शख़्स दोचार होगा तो उसके लिए जहन्नम की ख़बर है उसे दोज़ख़ से फ़रार हासिल न होगा और वही उसका ठिकाना होगा।

● में तो यह जानता हो कि मैं नमाज़ शुरू करदूं और एक सज्दा में ही सारी रात गुज़ार दूं और सुब्हान रब्बियल-आला पढ़-पढ़ कर बेखुद हो जाऊं।

● अगर कोई शख़्स नमाज़ पढ़ रहा हो और उसे कोई दोसरा शख़्स नेज़ा मार दे औ उसको ख़बर तक न हो तो यह नमाज़ का ख़शूअ है।

● अगर आदमी आसमानो और ज़मीनो के बराबर खुदा की इबादत करे तो खोदा उस इबादत को उस वक़्त तक क़बूल न करेगा जब तक वह बन्दा खुदा पर कामिल यक़ीन न करेगा।

● जो शख़्स रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर दरूद सलाम भेजता है अल्लाह तआला उस पर अपने ख़ास इनामात भेजता है और फ़रिश्ते भी उसकी सलामती की दुआएं करते हैं।

● जिसने खुदा को पहचान लिया कोई चीज़ उस पर पोशीदा नही रहती।

● वहदत की तारीफ़ यह है कि ग़ैरूल्लाह का ख़्याल भी दिल

की तरफ़ से न गुज़रे।

- मैने रिफ़अत व बलन्दी की तलब की और उसको पा लिया और यह सब कुछ मुझे फ़रोतनी और तवाज़ोअ करने से हासिल हुआ है और सिद्क़ वरास्ती के ज़रिए मदुमी और मुरव्वत हासिल की।
- फ़क़्र व मोहताजी के ज़रिए फ़ख़्रो बन्दगी हासिल होती है।
- जुहद में राहत है और क़नाअत में शर्फ़ है।
- सोते वक़्त मौत को सिर्हाने समझो और जब बेदार हो तो (मौत को) सामने समझो।
- तवक्कुल के ज़रिया बेपरवाई और इसतेगना हासिल होते हैं।
- गुनाह को मामूली मत जानो बल्कि बड़ा समझो क्योंकि उसी के बायस तुम गुनाह का इर्तेकाब करते हो। अगर गुनाह को हक़ीर समझोगे तो अल्लाह तआला को भी हक़ीर समझोगे।
- उन दिलों पर अफ़सोस है जो शक में पड़े हुए हैं और नसीहत हासिल नहीं करते।
- जिसने अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल को अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल जाना वह हर चीज़ को जान गया। और उस पर कुछ मख़्फ़ी न रहा।
- मेरा काम यह है कि सफ़र तवील है ज़ादे राह क़लील। इसी लिए हम:वक़्त आह व ज़ारी करता हुं।
- अपने दिल की हिफ़ाज़त करो।
- सलामती तन्हाई में है।

इस क़ौल की वज़ाहत में हज़रत दाता गंज बख़्श अली हिज्वीरी रहमतुल्लाह अलैह अपनी तस्नीफ़ कश्फ़ुलमहजूब मे फ़रमाते हैं कि गोशाए खलवत मे रहने वाले का दिल ग़ैर से ख़ाली होता है उसको दुनिया से कोई तवक़्क़अ नहीं होती और वह आफ़ाते ज़िन्दगी से महफूज़ होता है ताहम यह ख़्याल ग़लत है कि सिर्फ़ गोश: खलवत ही अख़्तियार कर लेना काफ़ी है। जब तक इब्लिस

का दिल पर ग़ल्बा हो नफ्सानी ख़्वाहीशात का ज़ोर हो और दुनियिा व उक्बा की कोई आरज़ू बनी नवे इन्सान को सता रही हो तो खलवत दर हक़ीक़त खलवत नही क्योंकि किसी चीज़ या उसके तसव्वुर से लुत्फ़अन्दोज़ होना बराबर है। हक़ीक़ी खलवत यह है कि साहबे खलवत ऐन मज्लिस मे भी खलवत से दस्त बर्दार हो अगर उज़्लत गुज़ीन हो तो उज़्लत में भी फ़रागत महसूस न करे।

- मैंने फ़ख़्र को चाहा तो वह मुझे फ़क्र में मिला।
- मैंने आख़रत की बुज़ुर्गी चाही तो वह मुझे क़नाअत में मिली।
- मैंने मुरव्वत तलब की तो वह मुझे सिद्क़ में मिली।
- मैंने आख़रत की सरदारी तलब की तो वह मुझे ख़लके ख़ुदा को नसीहत करने में मिली।
- मैंने नसब चाहा तो वह मुझे तक्वा में मिला।
- अगर लोग मुझे इसलिए दुश्मन रखते हों कि मैं बुराइयों से रोकता हुं और अच्छाइयों की तल्क़ीन करता हुं। ख़ुदा की क़सम! उनका यह तरीक़ा मुझे हक़ बात कहने से रोक नहीं सकता है।

हज़रत हरम रज़िअल्लाह अन्हो को नसीहत

हज़रत हरम बिन हय्यान रज़िअल्लाह अन्हो ने अर्ज़ किया कि आसूदगी हासिल करने आप रज़िअल्लाह अन्हो के पास हाज़िर हुआ हुँ तो यह फ़रमाया: "आज तक ऐसा कोई शख़्स न देखा जो अल्लाह तआला को जानता हो और उसके बावजूद आसूदगी की तलाश किसी इन्सान में कर रहा हो।"

हज़रत इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाह अलैहे की राय

हुज्जतुल इसलाम हज़रत इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाह अलैहे अहयाउल उलूम में फ़रमाते है हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो

अपने वक़्त के इमाम व मुक़्तदा थे वो दुनिया से बिल्कुल दिलबर्दाश्ता हो गए तर्के दुनिया पर उन्होंने बड़ी-बड़ी तकालीफ़ बर्दाशत फ़रमायीं।

हमने हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो की सिरते मुबारक: अहवाल और ख़सायस के बारे में पढ़ने की सआदत हासिल की यक़ीनन एक आशिक़े रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम और अल्लाह तआला की बरगुज़ीदा हस्ती की ज़िन्दगी के बारे में पढ़कर और उनकी सीरत के मुख़्तलिफ़ पहलूओं का मुताला करने से रूहानी सोकून मुंयस्सर आता है। लेकिन यहां एक सवाल पैदा होता हैं वह यह कि हमने इन तमाम हालात वाक़ेयात और अहवाल व ख़सायस का किस अन्दाज़ से मुताला किया? किस सोच को मद्देनज़र रखते हुऐ हमने इस किताब को पढ़ा? हमारी क्या नीयत थी? हम क्या चाहते थे?

आया हमने हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो की सीरते पाक़ को इस लिए पढ़ा कि यह एक दिवानए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम हैं। या इसलिए कि यह अल्लाह तआला के महबूब व मक़बूल बन्दे थे। या इसलिए पढ़ा कि कुछ वक़्त अच्छा गुज़र जाए या फ़िर इस नीयत से उसका मोतअला किया कि हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के बड़े तज़करे सुनते थे। आज हालात व वाक़्यात का बग़ौर मोताअला करें।

हमें इन सवालात का जवाब अपने दिल में तलाश करना होगा यही एक लमहए फिकरीया है कि हम इन अहवाल व ख़सायस के मोताअला के बाद अपना और अपनी नीयत का तज्ज़िया करें। जहां तक हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के इश्क़े रसूल सल्ल्ल्लाहो अलैहे व सल्लम और ख़ुदा की बन्दगी का मोआमला है तो उसके बारे में मेरा तो यह ईमान है कि उनकी इन्हीं दो ख़ुबियों का नतीजा है कि सदियां गुज़र जाने के बावजूद उनका इस्में गिरामी हमारी ज़ुबानों पर है। हर आशिक़े मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के दिल में आप

रज़िअल्लाह अन्हो की बेपनाह क़द्रो मन्ज़िलत है। वह जब ज़िक्रे अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो सुनता हैं तो उसके दिल की धड़कन तेज़ हो जाती है लेकिन जिस पहलू की तरफ़ मैं तवज्जोह दिलाना चाहता हुं वह यह है कि हमने आप रज़िअल्लाह अन्हो की सीरत का मोताअला करके अहवाल जान कर, सरकार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की मोहब्बत व फ़ेराक़ में दिवानगी को पढ़कर बन्दगी, खुदा को जांच कर हमने अपने लिए क्या अख़ज़ किया? बस इस किताब को तालीफ़ करने का मेरा मक़सूद भी यही है कि हम इससे अपना-अपना हिस्सा हासिल करलें।

हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो भी उसी परवर दिगार को मानने वालें हैं जो हम सबका भी ख़ालिक़ व मालिक व राज़िक है। यह जिन मिठे मदनी ताजेदारे उम्मत के ग़मख़्वार आक़ा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के इश्क़ में मुर्गे़ बिस्मिल की तरह तड़पते रहे। हम भी उन्ही महबूबे खुदा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की गुलामी का दावा करते हैं।

यह वाज़ेह है कि हम हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो नहीं बन सकते मगर सोंचिए ज़रा गौ़र किजिए! क्या यह मुम्किन है कि आज इस दौर में अपने दौर में हम भी अल्लाह तआला के मक़बूल बन्दे बन जाएं। हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो की हयाते मोबारकः को अपने लिए नमूना बनाते हुए हम भी ऐसे आशिके़ रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम बन जाएं कि जिस तरह अल्लाह तआला उनसे राज़ी हुआ हमसे भी खुश हो जाए।

हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो इस आला मोक़ाम तक किस तरह पहुंचे तो उसका जवाब आप रज़िअल्लाह अन्हो खुद इरशाद फ़रमाते हैं "अगर आदमी आसमानों और ज़मीनो के बराबर अल्लाह तआला की इबादत करे तो अल्लाह तआला उसकी इबादत को उस

वक्त तक क़बूल न करेगा जब तक वह अल्लाह तआला पर कामिल यक़ीन न रखे।"

अर्ज़ की गई कि अल्लाह तआला पर कामिल यक़ीन रखने का मसनून और मुस्तहब तरीक़ा क्या है? तो फ़रमाया: "जो चीज़ तुम्हारे लिए मोक़र्रर की जा चुकी है उसकी फ़िक्र करनी छोड़ दो। अल्लाह तआला की इबादत करते वक़्त दुनिया से इस तरह मुह मोड़ लो जिस तरह इन्सान मौत के वक़्त मुंह मोड़ता है और यह एहसासात व कैफ़ियात उसी वक़्त हासिल हो सकती हैं जब इन्सान मौत को हर वक़्त अपनी शह रग के क़रीब समझे अगर बन्दा ऐसा हो जाए तो वह अल्लाह पर कामिल यक़ीन रखने वाला वन जाएगा और इस तरह उसकी इबादत क़बूल होने के साथ-साथ कुर्ब इलाही नसीब होगा।"

यह है हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के इमान की मेराज। वाक़ई यह देखने में आया कि जब बन्दा दुनिया से मुंह मोड़ता है वह गुंनाहो की दलदल में फ़सने से बच जाता है। यह इरशादाते मुबारक इस हदीसे मुबारक की तफ़सीर करता है जिसमें सरकारे दोआलम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने फ़रमाया:

"मरने से पहले मर जाओ।"

यानी बन्दा मरने से क़ब्ल ही अपनी तमाम तर नफ़सानी ख़्वाहिशात, झुठी आरज़ूओं और तमन्नाओं को अल्लाह तआला की रज़ा के हुसूल के लिए कुर्बान कर दे फिर ऐसे ही खुश नसीब लोगों के बारे में इरशादे बारी तआला है।

"अल्लाह तआला उनसे राज़ी हुआ और वह अल्लाह तआला से राज़ी हुए-" यानी अल्लाह तआला जिन से राज़ी हो जाता है उन खुश क़िस्मत नुफ़ूस पर इनामात की बारिश होती है और फिर :

अबू बकर व उमर व उसमान व अ़ली

बिलाल हबशी व अवैस करनी (रज़ीयल्लाह अन्हुम)

जैसी हस्तियां सामने आती है।

लेकिन अल्लाह तबारक व तआला ने अपनी रज़ा एक चीज़ से मशरूत कर दी है उसका इज़हार खुद ही अल्लाह तआला ने इस आयत से आगे इरशाद फ़रमाया है।

"इस लिए कि वह अपने रब से डरे।"

गोया आज भी कुर्आन हकीम पुकार-पुकार कर कह रहा है कि ऐ नादान लोंगो! अगर खुदा को राज़ी करना चाहते हो तो फिर खुदा से डरना होगा और खुदा से डरना यह है कि उसके अहकमात की पैरवी की जाए, उसके महबूब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की तालिमात पर अमल किया जाए और गुनाहों की ज़िन्दगी से मुंह मोड़ कर दिल को यादे इलाही में लगाना होगा यही ख़ौफ़े खुदा है।

हमने पढ़ा कि हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो की हयात मुबारक अहकमाते इलाही और तालिमाते रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की पैरवी में बसर हुई। उनक़ी ज़िन्दगी का कोई हिस्सा उठा कर देख लिजिए वह हर तरह से बन्दगीये खुदा के मेयार पर पुरा उतरेगा। आप रज़िअल्लाह अन्हो का अख़लाक़, इसार, एख़लास, तक़वा, हुब्बे रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम, वालिदा माजिदा की इताअत, सबर व कनाअत, शुक्र व तवक्कुल, ख़ौफ़े खुदा, दुनिया से बे रग़बती, फ़िक्रे आख़िरत, अमर बिलमारूफ़ व नही अनिलमुन्कर अलगर्ज़ ज़िन्दगी का हर पहलू बन्दगीये खुदा का आइना दार है। आज अगर हम अपनी तरफ़ ग़ौर करें तो यह मालूम होता कि इन तमाम ख़सायस में से कोई भी हममे कमाहक़क़ोहु नहीं पाया जाता।

आख़िर किस चीज़ ने हमें इताअते परवर दिगार से रोक रखा है? हम अपने मस्त नुफ़ूस को शरीअत की लगाम क्यों नही डालते और उसे क्यों नहीं झंझोड़ते। इस नफ़्स बद मस्त को इस अन्दाज़ में मोख़ातिब करना क्यों नही शुरू करते कि:

''ऐ नफ़्स!

सिवाए उमर के तेरे पास सरमाया क्या है? उसका भी जो दम गुज़र जाता है फिर हाथ नही आता जो लम्हा गुज़र जाता है वह हमे ज़िन्दगी से दूर और मौत से क़रीब तर करता है। फिर सांसों की तादाद की कुछ ज़ेयादा नहीं। अगर है तो भी उसका हमें इल्म नहीं है और उमर बीत गई तो नेजात का सामान करने का सवाल ही पैदा नहीं होता लेहाज़ा जो कुछ भी करने के लायक़ है अभी कर ले। ज़िन्दगी के मैदान की तन्गी और अख़िरत के मैदान की वुस्अते ला महदूद हैं। इस मुख़्तसर सी ज़िन्दगी के बाद जज़ा है या सज़ा इसलिए इसमहदूद दुनियावी मैदान में कुछ कर गुज़र।

ऐ नफ़्स!

ख़ालिके़ कायनात ने आज का दिन जो तुझे दिया है बस जान ले कि यह एक दिन नही एक नई ज़िन्दगी अता की गई है। क्योंकि अगर नींद ही में मौत आ दबोचती तो यह कोई अजब बात नहीं थी यही हसरत होती कि काश! एक ही दिन की मज़ीद मुहलत मिल जाती और कुछ काम सवांरने का मौक़ा मिल जाता और अब इस हसरत व पछतावे से बचाने के लिए परवर दिगार ने जो मोहलत की नेमत अता फ़रमाई है उसे ग़नीमत जान।

ऐ नफ़्स!

अब मेरा कहा मान ही ले और ज़िन्दगी के इस मुख़्तसर मगर क़िमती तरीन सरमाया को ज़ाया न कर। ऐसा न हो कि आज युंही ग़फ़लत की नज़र हो जाए और कल की मोहलत ही न मिले। तो क्यों नही तसव्वुर कर लेता कि यह एक दिन की मोहलत तुझे मरने के बाद अता होती है यानी तुने मोहलत तलब की और परवरदिगार ने तुझे अता फ़रमादी अब अगर उसे ज़ाया करेगा तो तुझ से बढ़कर खसारा उठाने वाला कौन होगा?''

अगर इस तरह इन्सान अपने नफ़्स को झंझोड़े तो उम्मीद है कि एक दिन इन्सान ज़रूर नफ़्स परस्ती की दलदल से निकलने में कामयाब हो जाएगा क्योंकि नफ़्स ही इन्सान को रब्बे ज़ुलजलाल की नाफ़रमानी पर उक्साता है। गोया नफ़्स अम्मारा शैतान का वज़ीर है और बादशाह जो हुक्म देता है उसका ज़िम्मेदार वज़ीर ही को ठहरा देता है लेहाज़ा अल्लाह तआला की फ़रमाबरदारी करने के लिए नफ़्स की मोख़ालिफ़त करनी पड़ेगी और यह उसी सुरत में मुम्किन है कि नफ़्स को दुनिया से बे रग़बती पर उक्साया जाए। जैसा कि जब हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के ज़ुहद व तक़्वा से मुतआस्सिर हुए तो फ़रमाया: "मैं ख़ेलाफ़त को दो रोटी के बदले देता हुं" हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने फ़रमाया: " ऐसा कौन है जो लेगा? उसे सरे बाज़र फेंक दो और कह दो जिस का जी चाहे उठाले।"

इसी मुलाक़ात में हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हो की बारग़ाह में अर्ज़ की "ऐ उमर रज़िअल्लाह अन्हो! अब आप रज़िअल्लाह अन्हो तशरीफ़ ले जांए। क़ेयामत क़रीब है और मैं ज़ादे राह की फ़िक्र में हूँ।"

यह दोनों वाक़ेयात इस हक़ीक़त की अक्कासी कर रहे है कि हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो ने नफ़्स को दुनिया से बे रग़बती और नाउम्मीदी की लगाम डाली और नफ़्स बदमस्त को नफ़्से मुत्मइन्ना बना दिया। ऐसा नफ़्स मुत्मइन्ना जिस की तरफ़ अल्लाह तआला ने कुर्आन हकीम में इशारा फ़रमाया:

तरजुमा: "ऐ इत्मिनान वाली जान अपने रब की तरफ़ वापस हो यूं कि तु उससे राज़ी वह तुझसे राज़ी फिर मेरे ख़ास बन्दों में दाख़िल हो और मेरी जन्नत में आ। (यह ख़ेताब नफ़्से मुत्मईन्ना वाले मोमिन से बवक़्ते मौत किया जाएगा।)

हमें इस पर ख़ूब ग़ौर करना चाहिए कि जब अल्लाह तआला ने इस बारे में हमसे पुछा तो हमारा क्या जवाब होगा। इस गुफ़्तगू को समझने के लिए मुन्दरजा ज़ेल हेकायत क़ाबिले ग़ौर है।

एक रोज़ ख़लीफ़तुलमुस्लेमीन का दरबार लगा था। अमीरूल मोमेनीन अपने तख़्त पर जलवा अफ़रोज़ थे। और अपनी सल्तनत के मोख़्तलिफ़ सरदारों से मोख़्तलिफ़ ओमूर पर गुफ़्तगू हो रही थी। गुफ़्तगू के बाद ख़लीफ़ा ने उन सरदारों को ख़िलअते फ़ाख़ेरा से नवाज़ा और सब सरदारों को अगले दिन यह ख़िलअतें ज़ेबे तन करके दरबार में हाज़िर होने का हुक्म दिया। चुनानचे सब सरदारों ने हुक्म की तामील की। जिस पर ख़लीफ़ा बेहद ख़ुश हुआ दरबार में जो सरदार हाज़िर थे उनमें से एक को नज़्ला की शिकायत थी जिस की वजह से वह बहुत परेशान था उसने एक पास बैठे सरदार को सरगोशी करते हुए कहा "ऐ नेहावन्द के सरदार! इस वक़्त मै बेहद परेशान हुं नाक रेज़ीश का शिकार है और गले मै तरावश हो रही है बताओ कि मै क्या करूं?" नेहावन्द के सरदार ने जवाब दिया "सबर से काम लो यह दरबार है यहां ऐसी बातें क़ाबिले मसमुअ़ नहीं होतीं" लेकिन थोड़ी ही देर बाद उस सरदार ने छीकें लेना शुरू करदीं। पै दरपे छीकों ने सबकी तवज्जुह उसकी तरफ़ मुन्अतिफ़ कर दी। ख़लीफ़ा को उसकी छीकें बहुत नागवार गुज़रीं लेकिन उसने चश्म पोशी से काम लिया। छीकों ने नाक से तिल्ली-तिल्ली जारी कर दी और उसने बे अख़तेयार अपनी ख़िलअत की आसतीन से नाक पोंछ ली। ख़लीफ़ा को उसकी हरकत बड़ी नागवार गुज़री और उसने डांट कर कहा, "ओह ज़लील इन्सान यह तुने क्या कर दिया?" सरदार के पास इसका कोई जवाब न था वह ख़ामूश रहा। ख़लीफ़ा ने फिर वही सवाल किया "तुने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया? सरदार बोला "हुज़ूर वाला! रहम ... गलती हुई ... गुनहगार हूँ ... लेकिन मेरा गुनाह, यह ग़लती ग़ैर अख़्तेयारी और इज़्तेरारी थी

इस लिए मुझे माफ़ कर दिया जाए।"

ख़लीफ़ा ने दरबानों को हुक्म दिया। "इससे मेरी ख़िलअत वापस ले ली जाए और उसे दरबार से निकाल दिया जाए।"

हुक्म की मन व अन तामील हुई और सरदार से ख़िलअत छीन कर उसे दरबार से बाहर निकाल दिया गया और ख़लीफ़ा ने दरबार बरख़ास्त किया।

नेहावन्द के सरदार का कहना है कि मेरे दिल पर इस वाक़्या का गहरा असर पड़ा दरबार बरख़ास्त होने के बाद लोग चले गए तो मै ख़लीफ़ा के पास गया और अर्ज़ किया, "हुज़ूर वाला! आप इन्साफ़ से काम लें तो यह मस्ला हल हो सकता है।" ख़लीफ़ा ने तअज्जुब से पुछा, "कौन सा मस्ला?" मस्ला तो मैने हल कर दिया। मैंने ख़लीफ़ा को याद दिलाया, " अमीरूल मोमेनीन! मस्ला यह है कि अब मुझे आप के दरबार की हाज़िरी और ख़िलअते फ़ाख़ेरा की वसुलियाबी पर शर्म महसूस हो रही है।" ख़लिफ़ा नाराज़गी का इज़हार करते हुए बोला "मेरे दरबार का तु दूसरा ख़ताकार है तु होश में तो है क्या जानता है कि तु क्या बक रहा है?"

मैंने जवाब दिया: " यहां आने से पहले और अभी थोड़ी देर क़ब्ल तक मै बेख़बर था लेकिन अब मै होश में आ चुका हुं इस लिए इस वक़्त जो कुछ कह रहा हुं अपने होश हवास में रहकर कह रहा हुं। ख़लिफ़ा ने पुछा " अख़िर तु क्या कहना चाहता है?" मैंने जवाब दिया "सिर्फ यह कि मैंने नेहावन्द की सरदारी पर फाइज़ रह कर और आप से ख़िलअते फ़ख़ेरह वसूल करके अपनी ज़िन्दगी की बद् तरीन ग़ल्तियां की है। बराहे करम आप अपनी ख़िलअत फ़ाख़ेरह वापस ले लें।" ख़लिफ़ा एक दम जलाल में आ गया और बोला। "यह तु क्या बक रहा है?" मैंने नेहायत नरमी और खुश अख़लाक़ी से अर्ज़ किया: "जनाबे वाला! मैंने जो कुछ कहा है अपने होश में रह कर कहा है।

आज जब आपने एक सरदार को महज़ इस वजह से ख़ताकार क़रार दे दिया कि उस ने ग़लती से आप की अता की गई ख़िलअत से नाक पोंछ ली थी तो मैंने सोचा कि मेरे मालिके हक़ीक़ी ने भी हमें एक मुस्तक़िल ख़िलअत अता कर रखी है और हम उस ख़िलअत से कैसा नाज़ेबा और नारवा सलूक करते है क्या हमें हमारी इस गुस्ताख़ी की सज़ा नही दी जाएगी? ज़रूर दी जाएगी। अमीरूल मोमेनीन! आप मख़लूक़ है और जब आप को यह पसन्द नही कि कोई आप की अता की गई ख़िलअत से बे अदबी करे तो वह जो हम सबका मालिक व ख़ालिक़ है यह बात क्योंकर गवारा करेगा कि हम उसकी अता की गई ख़िलअत को उसकी मख़लूक़ के सामने करें।''

ख़लिफ़ा चकरा गया घबरा कर आहिस्ता से बोला। ''ऐ नेहावन्द के सरदार तु जा सकता है।'' चुनानचे वह नेहावन्द का सरदार जो अब सरदारी को तर्क कर चुका था। उस वक़्त के मशहूर बुजुर्ग हज़रत सिरी सक़्ती रहमतुल्लाह अलैहे की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उनके ज़रिए हज़रत जुनैद बगदादी रहमतुल्लाह अलैहे के दस्ते मुबारक पर तौबा की अब दुनिया उन्हे अबु बक्र शिबली रहमतुल्लाह अलैहे के नाम से याद करती है।

अब इस हेकायत पर ग़ौर किजिए कि अल्लाह तआला ने इन्सान को क्या कुछ अता नही किया? कौन सी ऐसी नेमत है जिस से इन्सान महरूम है। आख़िर हम किस-किस नेमत की नाफ़रमानी करेंगे। हवा, पानी, आग व ख़ाक या जिस्म हर-हर नेमत ही तो ख़ालिक़े कायनात के शुक्र की अदायगी की तरफ़ पुकार रही है। याद रहे अल्लाह तआला ने क़ुर्आन हकीम में फ़रमाया है।

''सुम्मा लतुस्अलुन्न यौमऐज़िन अनिन्नईम''

तरजुमा: '' फिर तुम से हर एक नेमत के मोतअल्लिक़ पूछ गुछ होगी।''

क्या हम इस क़ाबिल है कि हर-हर नेमत के बारे में सवालात के जवाबात दे सकें। उधर सिर्फ एक दुनिया दार बादशाह ने एक दुनिया दार सरदार को हक़ीर दुन्यवी तोहफ़ा यानी ख़िलअत दी और मामूली सी ग़ैर अख़्तेयारी ग़लती पर उस से वह हक़ीर सी ख़िलअत वापस ले ली गई। इधर हम है कि अल्लाह तआला की इनायत की गई बे शुमार नेमतों की हर तरह से नाशुक्री करते है। अगर अल्लाह तआला हमसे नाराज़ हो गया तो क्या कोई दूसरा खुदा है जिसके पास जा सकेंगे? अगर कल बरोज़े क़ेयामत अल्लाह तआला ने हमसे पूछ लिया कि बताओ मैने तुमको जवानी अता की उसको कैसे गुज़ारा? मैने तुमको माल दिया उसको कैसे खर्च किया। मैने तुम्हे दुनिया की बेशुमार नेमतें अता की उसका इस्तेमाल कैसे किया? मैने तुम्हे ईमान की दौलत से माला माल किया और हुक्म फ़रमायाः

तरजुमाः ऐ ईमान वालों! अल्लाह से डरो जैसा कि डरने का हक़ है और मरना तो मुसलमान मरना।

यानी तुम ख़लवत में हो या जलवत में हर हालत में अल्लाह तआला से डरो और ईमान लाने के बाद ऐसे काम न कर बैठना जो तुम से मोमिन की सेफ़ात को दूर कर दे, यानी किसी ग़ैर मुस्लिम के तरीक़े पर न चलना, किसी नस्रानी, यहूदी या आतिश परस्त की पैरवी न करना कहीं ऐसा न हो जाए कि ऐसा करने से बेख़बरी में खुदा की नाराज़गी मोल ले लो क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

तरजुमाः "जो जिस क़ौम की मोशाबहत अख़्तेयार करेगा। पस वह उन्हीं में से है।"

बल्कि तुम मरना तो मुसलमान मरना ताकि जब जनाज़ा उठे दुनिया वाले कहें कि वाक़यी यह किसी आशिक़े रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम का जनाज़ा जा रहा है। ख़ालिक़ के फ़रमाबरदार का जनाज़ा

जा रहा है। किसी मक़बूले खुदा बन्दे का जनाज़ा जा रहा है।

अब हमे खुद ही फ़ैसला करना होगा अपना मोहासबा करना होगा कि हम अल्लाह तआला से कितना डरते है और क्या वाक़ई हम अपने परवर दिगार से ऐसा डरो जैसा कि डरने का हक़ है या फिर दुनिया के मामूली अफ़सरों से माले दुनिया की ख़ातिर डरते हैं।

क्या वाक़ई हमारे आमाल ऐसे है कि हम फ़ख्र से यह कह सकें कि अल्लाह तआला को राज़ी करने में कामेयाब होजाएं। उस पर हमें ख़ूब सोचना होगा।

हमे सोचना चाहिए कि अगर अल्लाह तआला ने यह पूछ लिया कि मैंने तुम को ईमान की दौलत अता की और यह हुक्म फ़रमाया:

तरजुमा: "ऐ ईमान वालों! अपने आप को और अपने घर वालों को जह्न्नम की आग से बचाओ।"

क्या हम खुद को और अपने अहले ख़ाना को जहन्नम की आग से बचा रहे हैं। कहीं ऐसा तो नहीं कि खुद रिश्वत लेते और खाते हों और घर वालों को भी खुब रिश्वत का माल खिला रहे हों। क्या हमें गुनाह करने से शर्म नहीं आती। क्या हम भी अपने गुनाहों पर नादिम हुए हैं?

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया:

"जो शख़्स हँस कर गुनाह करता है वह रोता हुआ जहन्नम में जाएगा।"

अफ्सोस हम माल की मुहब्बत में पड़ कर सबकुछ भूल गए हैं।

जीतने दुनिया सिकन्दर था चला
जब गया दुनिया से खाली हाथ था
दौलते दुनिया के पीछे तु न जा
आख़िरत में माल को है काम क्या

इर्शादे बारी तआला है:

और शैतान के क़दमों पर न चलो बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।''

मगर हम लोग गफ़्लत की दलदल में फसते जा रहे हैं और शैतान की पैरवी में मसरूफ़ हैं। शैतान हमें अग़यार के तरीकों की तरफ़ रगबत दिलाता है और हम आंख बन्द किए उसके जाल में फँस जाते हैं। शैतान हमें दीन से दूर ले जा रहा है मगर हम पर किसी बात का असर तक नहीं होता।

अल्लाह तआला का एहसान अज़ीम है कि उस ने हमें ईमान की दौलत से सरफ़राज़ फ़रमाया। अब हमारा यह फ़र्ज़ बनता है कि हम उसके अहकामात की बजाआवरी करें और शैतान के दावों से बचने के लिए पैरविये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम करें।

आज हमारे ईमान की यह हालत है कि अगर एक डाक्टर किसी मरीज़ को कह दे कि फ़लां चीज़ से परहेज़ करो वर्ना तुम्हारी सेहत को ख़तरा है तो बन्दा फौरन डाक्टर की बात पर अमल करते हुए नुक़सानदेह चीज़ से परहेज़ करता है।

वकील साहब कहतें है अगर यह बेयान दिया जाए तो बन्दा सज़ाए मौत से बच सकता है तो फौरन बेयान वैसा ही दिया जाता है। साइंसी आलात अगर यह बतादें कि कल फ़लां जगह ज़लज़ला आएगा तो लोग फौरन वह जगह ख़ाली कर देंगे लेकिन अगर खुदा और उसके महबूब रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम यह पेशन गोइ फ़रमादें कि अगर नमाज़ जान बूझ कर क़ज़ा की तो दो करोड़ अठ्ठासी लाख साल जहन्नम की आग में जलना पड़ेगा। एक रोज़ क़ज़ा किया तो नौ लाख साल जहन्नम की आग में जलना होगा और जिस ने अपने वालिदैन की नाफ़रमानी की वह उस वजह से जहन्नम में जाएगा तो यह सब सुन कर हमारे सर पर जूं तक नहीं रेंगती हां यही हमारे ईमान की हालत है।

हांलाकि हक़ीक़त यह है कि डाक्टर की बात ग़लत हो सकती है वकील की बात झुठी हो सकती है साइंसी आलात व मराकिज़ की पेशन गोई ग़लत हो सकती है लेकिन ख़ालिक़ व मालिके कायनात और उसके भेजे हुए महबूब रसूल सय्य दुल मुरसलीन सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की एक-एक बात सच है। ग़लत होना तो दूर की बात है उसमें ज़री बराबर भी कमी या ज़ेयादती मुम्किन नहीं है।

इस लिए अभी मौक़ा ग़नीमत जानते हुए हमें अपना-अपना मोहासबा अभी से शुरू कर देना चाहिए और अपनी ज़िन्दगी हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो के तरीक़े पर चलाने की सऔ करनी चाहिए फिर तब ही हम अल्लाह तआला के मक़बूल बन्दे बन सकेंगे। जब अल्लाह तआला हम से राज़ी हो गया तो हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो की तरह हमारे दिल में भी अपने महबूब सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की मोहब्बत की शमा रौशन कर देगा।

बहरे ग़फ़लत तेरी हस्ती नहीं
देख जन्नत इस क़दर सस्ती नहीं
माल के जन्जाल से हमको निकाल
हो अता या रब हमे सोज़े अवैस
रज़िअल्लाह अन्हो

दरबारे अवैसी रज़िअल्लाह अन्हो

हुई अवैस रज़िअल्लाह अन्हो ते जद तासीरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम दी
रखी सजा के दिल व पसा तसवीरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम दी
एक दन्द दे तसव्वूर बती शहीद किते,
सभी अवैस रज़िअल्लाह अन्हो कुरबानी तो कीर मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम दी
पुरा ओ हना नो आया ओह खरक़ा मुबारक
ख़्वाजा दे हिस्से में आई जागीरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम दी
सी ज़ाते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम दी आहदी नज़र व चानन
ख़्वाजा अवैस रज़िअल्लाह अन्हो कुरबानी तनवीरे मुस्तफ़ सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम दी
व सदा रहावे हमेशा अवैसी एहिआ दवारा
उस दर तुं लभ दी ऐ तफ़सीरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम दी
बपीरने पीर रज़िअल्लाह अन्हो यार व रहबर बशीर दे ने
नज़रे करम अवैसी तासीर मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम दी

मन्क़बत

हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो

ऐ सरवरे यगाना हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो
महबूबे ज़माना हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो

करना नज़र जो मुझ पर आया हुं तेरे दर पर
ऐ आशिक़ो के रहबर हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो

तुम गन्जे सर मदी हो. मक़बूले इयज़दी हो
महबूबे अहमदी हो हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो

जो रम्ज़ है तुम्हारी अल्लाह को है प्यारी
वाक़िफ़ है ख़लक़ सारी हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो

तो शहन्शाहे निराला, तेरा है बोल बाला
मतलूबे कमली वाला सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हज़रत अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो

कसीदह मोक़द्दसा

हज़रत ख्वाजह अवैस क़रनी रज़िअल्लाह अन्हो

बिस्मिल्लहिर्रहमानिर्रहीम

सल्ले या रब्बे अला रअ़से फ़रीक़िन्नास

ऐ अल्लाह! तमाम लोगों के सरों पर दरूद भेज!

मिन्हो लिलख़लके अमानुन बे-ज़ मानिल यासी

क़ेयामत में सिर्फ उन्हीं से मख़लूक़ को अमान होगी

सल्ले या रब्बे अला मन हो-व फ़ी हरे-ग़दी

ऐ रब तआला उस ज़ात पर दरूद भेज जिस ज़ात ने

कुल्लो मन यज़्मओ यस्क़ीहे रहीक़ल कासी

हर प्याले को ख़ालिस शराबन तहूरा के प्याले भर-भर कर पिलाएंगे

सल्ले या रब्बे अला मन बे-र जा-अिल करमी

ऐ रब तआला! उस ज़ात पर दरूद भेज जिस के लुत्फ़ व करम से

खुसस मन जा-अ-एलैहे बेउमुमीन्नासी

उनका करम अपने पराए के लिए है जो भी आया महरूम न रहा

सल्ले या रब्बे अला मुं-ने-से कुल्लिल बशरी

ऐ रब! हर बशर के मुनिस व ग़मख़्वार पर दरूद भेज!

मोबद्दलील वहशते फ़ी क़बरे बा सेतीना

हर क़बर में अपने उन्स से क़बर वाले की वहशत दूर फ़रमाएंगे

सल्ले या रब्बे अला रूहिर्रई सिर्रसूली

ऐ रब तआला! रुसुले कराम अलैहेमुस्सलाम के रूह और उनके सरदार पर दरूद भेज

फ़नफ़्तदी नहनो अला अर जोले ही बिर्रासी

हम तो उनके क़दमों पर सर कुर्बान करने वाले है

सल्ले या रब्बे अला ज़ी नेअमिन दा-य-मतिन

ऐ रब तआला! दाएमी नेमतों वाले नबी अलैहिस्सलाम पर दरूद भेज

नेमल यौ-म अलल ख़-ल-के बिला मिक्यासी

मख़लूक़ पर आज भी उनकी अनगिनत नेमतें है।

सल्ले या रब्बे अला साहबे श-र-इन ह-स-निन

ऐ रब तआला! बेहतरीन शरीअत वाले नबी अलैहिस्सलाम पर दरूद भेज

फ़र्रक़न ना-स मता जा-अ मिन नसनासी

जिन्होंने तशरीफ़ लाते ही अच्छे बुरे से मुम्ताज़ बनाया है

सल्ले या रब्बे अला ज़ी क-र-मिन उममेतही

तदख़ोलुल जन्न-त फ़िल हश-रे बिला विस्वासी

सल्ले या रब्बे अला मन हो-व लौ-ला-हो लमा

यश-मलुन्ना-सिय-तल कौनो म-अल हस्सासी

सल्ले या रब्बे अला मन हे-व मिन इस्मतेही

या सिमुल हक्क़ो मोहिब्बीह मिनल ख़न्नास

हक़ तआला आपके उशशाक़ को ख़न्नास से महफूज रखता है

सल्ले या रब्बे अला मन हो-व मन आ-ज़ बेही

ऐ रब! उस ज़ात पर दरूद भेज जिनकी ज़ात से जिसने पनाह ली तु।

लम तसिल क़त्तो इलैहे य-दुल वस्वासी

उसे कभी शैतान न बहका सकेगा

सल्ले या रब्बे अला मन हो-व मन बा-र-क़ह

ऐ रब तआला! उस ज़ात पर दरूद भेज जिनकी हिस पर तलवार चमकी।

अस्सैफ़ो क़द अज़-ह-ब कत्अन बसरश्शासी

तो यक़ीनन दुश्मन की आंख को मिटा डाला!

सल्ले या रब्बे अला साहबे नौअिश श-र-फ़े

ऐ रब तआला! शराफ़त वाले नौअे इन्सानी पर दरूद भेज।

मय्-य-ज़न्ना-स बेही फ़ज़-लो मिनल अजनासी

जिन्हे तेरे फ़ज़ल ने नौअे इन्सानी के जिन्स से मुम्ताज़ बनाया।

सल्ले या रब्बे अला मन बे-नख़ी-लिल कर-मी

ऐ रब तआला! उस ज़ात पर दरूद भेज जिनकी नख़ीले करम के।

फ़ी-रिया-ज़िल ओ-म-मिल यौमे लना ग़ेरासी

आज भी रहम में हमारे लिए बाग़ात मौजूद है!

सल्ले या रब्बे अला मन ले-गिन्ना-इल करमी

ऐ रब तआला उस ज़ात पर दरूद भेज जिस का ग़नाए करम

मिन बोयूतिल फोक़राअ यज़ हबो बिल इफ़लासी

फोक़रा के घरों से इफ़लास को मार भगाता है!

सल्ले या रब्बे अला इत रते-हि ताहेराते

ऐ रब दरूद भेज आप की इज़्ज़त पाक पर

व अलस सहबे म-अल हमज़ते वल अब्बासी

और आप के सहाबा कराम और हम्ज़ा व अब्बास पर

सल्ले या रब्बे अला मन ले ओवैसिन मिन्हो

ऐ रब तआला! उस ज़ात पर दरूद भेज जिनके इलाक़े अवैस का

तह्हरल क़ालबो क़-ल-बो मिनल अदनासी

जिस्म और दिल गुल व ग़श से पाक व साफ़ हुआ।

★★★

RAZVI KITAB GHAR

425, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6

Ph:.011-23264524 Mobile. 9350505879